शाश्वत धर्म

जुलाई १९९२

प्रधान संपादक

जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,

* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृर्ति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद.

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रधान सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय ✆ ५३४ ०७ २४ निवास ✆ ५३४ ८० ७३

शाश्वत धर्म कार्यालय

डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक २ ★ जुलाई १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

झरोखा

- सम्पादकीय ..... जे. के. संघवी ३
- शीलत्व की सौरभ ..... आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. ५
- श्री शांति जिन स्तवन (१६) .. मुनि श्री जयानन्द विजयजी म. ११
- आचारांग की सूक्तियाँ ..... श्री पुखराज भंडारी १५
- आओ ! सूरज से कुछ प्रेरणा लें ! .. मुनिश्री रत्नसेनविजयजी म. १८
- प्रतिमा स्वरुप ..... मुनिश्री प्रशान्तरत्नविजयजी म. २७
- मानवीय शिक्षा क्यों और कैसे ..... श्री पन्नालाल मुंधड़ा ३९
- समाचार दर्शन ..... संकलित ४१

स्थाई स्तम्भ

- काव्यसुधा ..... मुनिश्री तरूणसागरजी/मुनिश्री विमलसागरजी १०
- क्या आप जानते हैं ? ..... धर्ममित्र १३
- ज्ञान कसौटी (१६) ..... श्री महेन्द्र जे. संघवी २१
- स्वास्थ्य चर्चा ..... श्री मुकेश कुमार २३
- सरे राह चलते चलते ..... मुसाफिर २५
- शब्दसागर इनामी स्पर्धा (१२) . साध्वीश्री प्रियसुदर्शनाश्रीजी म. ३१
- प्रेरक कथा (समर्पण) ..... श्री नैनमल सुराणा ३४
- रुकिये ! पढ़िये !! और सोचिये !!! ..... प्रवासी ३७

गुजराती विभाग

- अधुरुं मन्दिर ..... श्री पूर्णचंद्रविजयजी गणिवर्य ४९
- दया अने करूणा नी मुर्ति समा शेठाणी ..... पं. श्री पूर्णानंदविजयजी म. 'कुमार श्रमण' ५४

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

पारिवारिक कलह निवारण हेतु समाज के मुखिया, संस्थाओं के कर्णधार ध्यान दें!

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से सहयोग प्राप्त किये बिना उसके जीवनयापन की कल्पना कठिन है। समाज भी व्यक्तियों के समूह से बनता है, इस प्रकार व्यक्ति एवं समाज एक दूसरे के पूरक हैं। यदि व्यक्ति संस्कारित होगा तो समाज आदर्श होगा। यदि व्यक्तियों में विकृतियाँ, दोष होंगे तो समाज में घुलकर उसे बदनाम तो करेंगे ही किन्तु प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में समाज के व्यक्तियों पर ही उसका असर पडेगा।

आये दिन समाचार पत्रों में या व्यवहारिक जीवन में वैवाहिक जीवन सम्बन्धी विविध घटनायें पढ़ने या सुनने को मिलती है, जिनमें विशेषकर दहेज के नाम पर महिलाओं की बलि की बात होती है। जिन परिवारों में यह घटनायें घटती हैं, उनकी परेशानियाँ वे ही जानते हैं किन्तु इन सारी घटनाओं के पिछें मात्र दहेज का कारण न होकर वास्तविकतायें और भी हो सकती है।

महिलायें अपने जिद्दी स्वभाव के कारण अपने पति या ससुरालवालों के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती है। छोटी–छोटी बातों के लिए जिद्द भी एक दिन घर में तूफान का कारण बनती है। कभी पति पर एकाधिकार व्यक्त करती हुयी वह चाहती है कि उसकी हर इच्छा पूरी हो। शुरू में उसकी इच्छा पूरी कर दी जाती है, लेकिन एक समय ऐसा आता है कि पति उसकी इच्छा पूरी करने में सक्षम नहीं होता। वह यह नहीं सोचती कि पति की भी मजबूरियाँ हैं। आखिरकार कोई विकल्प न होने से पति पत्नी की परवाह करना छोड़ देता है और स्थिति कलह में पहुंच जाती है। तनाव पारस्परिक घृणा और क्रूरता से तंग आकर कभी–कभी एक पक्ष अपने जीवन को भी समाप्त कर देता है।

कभी पति द्वारा अपनी पत्नी की उपेक्षा एवं उसकी गतिविधियों पर ध्यान न देना पत्नी को अपमानजनक लगता है। वह खुद को उपेक्षित एवं परित्यक्त महसूस करते हुए जीवन को अनुपयोगी समझकर नासमझी से ससुरालवालों को नीचा दिखलाने या समाज की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए एक साधन रूप जीवन का अन्त कर देती है, जबकि पति व ससुरालवालों पर दोषारोपण किया जाता है कि 'बेचारी बहु को मार डाला।'

यह भी संभव है कि बहु कभी छोटे परिवारवाले घर से आयी हो और ससुराल में बडा परिवार उसे रास नहीं आता। क्यों कि वहाँ कई पीढ़ी के लोग साथ रहते हों तो उनके साथ कई तरह से समझौता कर घर गृहस्थी चलानी पड़ती है। वह सोचती है कि मायके में मेरी हर जिद मां–बाप पूरी करते थे, यहाँ भी वह आझादी मिले। लेकिन भारतीय परिवार में यह संभव नहीं। कभी ससुराल में उसके देवर या ननद उसके कोई सामान का एक दिन उपयोग कर ले या छुए तो भी वह बिगड़ जाती है। पति अपने माता–पिता, चाचा–चाची, भाई–बहन से प्यार करता

है तो वह भी उसे अच्छा नहीं लगता। ऐसी बहुएं समझती है कि पति सिर्फ उनके लिये ही है। वह यह नहीं सोच पाती कि किसी अन्य सदस्य के प्रति भी उसके कुछ कर्त्तव्य हैं। उसे मात्र स्वयं से मतलब होता है दूसरों से नहीं। पति के समझाने पर उसे लगता है जैसे मेरा कोई महत्व ही नहीं है। 'या तो घर में मैं रहूंगी या फिर...'। 'अगर मुझसे प्यार है तो अलग घर क्यों नहीं ले लेते।' इस प्रकार शुरू हो जाता है पति–पत्नी के बीच मतभेद।

संपन्न परिवारों से आयी बहुओं द्वारा आत्महत्याऐं किये जाने की घटनायें भी बढ रही है। वह किसी भी बात में मायके के नियम–कायदे और वहाँ की सम्पत्ति की चर्चा जोड़ देती है। यदि वहाँ से ज्यादा दहेज लायी है तो पति या ससुरालवालों के प्रति कड़ा व्यवहार करते हुए बातबात में ताने भी मारने लगती है। अगर किसी सदस्य ने किसी सामान को छू भी दिया तो बिना झिझक कहेगी कि खराब हो जायेगा। कभी किसी सामान की कोई टूट फूट या नुकसान हो जाय तो यह कहने में भी संकोच नहीं करती कि मुफ्त का माल है, इसीलिए तो कदर नहीं करते। यदि अपनी कमाई का खरीदा होता तो समझ में आता। रोजाना की यह टीका–टिप्पणी पति के लिये असह्य होती है और वह भी विद्रोह कर उसी तर्ज में पत्नी को जवाब देने लगता है। नतीजन तनाव घटने के बजाय बढता है और अनहोनी घटना बनती है।

इस प्रकार विवाह के पश्चात् अप्रिय घटनाओं के पिछे कई प्रकार के कारण हो सकते हैं। धन के आधार पर, अनमेल विवाह के कारण, सासु–बहू का मनमुटाव होकर विवाह के कुछ दिन बाद अलग रहने की भावना, ससुराल के स्थान पर अपने मायके (पीहर) की ओर ज्यादा झुकाव, गृहकार्य में रूचि न होना, परस्पर वात्सल्य का अभाव आदि कई कारणों से ये घटनायें होती है। कभी ससुरालवाले दहेज के लिए बहु को मानसिक रूपसे प्रताडित करते है। कारण कुछ भी हो लेकिन यह सत्य है कि इन घटनाओं से जहाँ उससे सम्बन्धित परिवार परेशान होते हैं वहीं स्वस्थ समाज के लिए यह चिन्ता का विषय जरूर है। लड़के वालों द्वारा लड़की वालों पर या लड़की वालों द्वारा लड़के वालों पर सच्चे–झूठे या मनघड़ंत आरोपों के लगाने, अथवा दहेज की मांग का दोष लगाकर सरकार का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास कर एक दूसरे को नीचा दिखाने या न्यायालयों में केस चलाने से इसका हल नहीं होगा।

यह अत्यन्त महत्व पूर्ण प्रश्न है और इन घटनाओं से समाज कलंकित हो रहा है। समाज के मुखिया, कर्णधार आदि इन अत्याचारों को देख रहे हैं। वे चुप हैं, चिन्ता का विषय है किन्तु कर कुछ नहीं रहे हैं। आम लोगों की यह प्रवृत्ति रहती है कि सही बात कहकर हम क्यों बुरे बने? अगला व्यक्ति अपनी जिद्द छोड़कर नहीं मानने की तैयारीवाला हो तो सामान्यतः लोग उसकी हाँ में हाँ मिलाते हैं, उसके सामने असलियत कहने की हिम्मत नहीं करते, जिससे उसका बल और बढता है। फलतः समस्या सुलझने के बजाय और उलझती है।

समाज के मुखिया व कर्णधार अपनी नेक जिम्मेदारी समझकर ऐसी घटनाओं की तह में जाकर असलियत का पता लगायें एवं निर्दोषों को ईमानदारी से साथ देकर योग्य समाधान का प्रयास करें तो काफी मामले आसानी से सुलझ/सिमट सकते हैं। यह आज समय का तकाजा है।

D. K. Sanghvi

(जे. के. संघवी)

ऐतिहासिक कथा

शील की सौरभ

गंताक से आगे

—आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी

आ.श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

शील की जितनी प्रशंसा की जाये, उतनी कम है। विजया ! शीलव्रत को धारण कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाओ, यही तुम्हें मेरा धर्मबोध है।

हम अपने आचार के अनुसार कहीं स्थायी निवास नहीं कर सकती , अतः हम यहाँ और अधिक रहने में असमर्थ है, मुझे विहार करना ही पड़ेगा। तुम धर्म ध्यान में रहना और मेरी बातों को ध्यान में रखना।

मेरी मानो तो तुम शुक्ल पक्ष में ब्रह्मचर्य पालन का जीवन भर के लिए नियम ले लो और पच्चक्खाण ग्रहण करो। यही मेरे प्रति तुम्हारा सच्चा प्रेम होगा, सच्ची श्रद्धा होगी। परमात्मा तुम्हें शीलपालन की शक्ति प्रदान करें।

और विजया ने दृढ संकल्प पूर्वक शुक्ल पक्ष में आजीवन ब्रह्मचर्य पालन का नियम ले लिया। गुरुणीजी ने व्रतोच्चारण करवाके, पच्चक्खाण दिया और वे अन्यत्र विहार कर गयीं।

विजय के पिता सेठ अर्हद्दास सुशील कन्या की खोज में थे। एक बार जब वे मन्दिर से घर लौट रहे थे; तब अचानक उन्हें विजया दिखाई दी । पूजा के वेष में वह एक सती साध्वी सी लग रही थी। वह प्रभु पूजन के लिए मंदिर जा रही थी। सेठ अर्हद्दास उसे देखकर कुछ विचार मग्न हो गये। उन्हें लगा कि यह कन्या विजय के जीवन में अवश्य ही बहार ला देगी।

अब सेठ अर्हद्दास आगे की कार्यवाही में लगे।उन्होंने सेठ धनावह से विजय के लिए विजया की माँग की। धनावह सेठ को यह रिश्ता मंजुर हो गया। शुभदिन शुभमुहूर्त में विजय - विजया का विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ। उनके माता-पिता को कहाँ मालूम था कि गृहस्थ जीवन में जुड़े जीव संयम मार्ग के पथिक हैं। उनका काम अकाम है, उनका श्रृंगार वास्तव में सादगी है, और उनका स्नेह वैराग्य है; यह कोई नहीं जानता था।

नवेली दुल्हन विजया सोलह श्रृंगारों का बोझ स्वयं पर लाद कर पिया मिलन के लिए चली। आसमान में टिमटिमाते तारे आँखें फाड़-फाड़ कर उस दृश्य को निहारने लगे।

सजे सजाये चित्रमन्दिर में विजया ने गजगति से प्रवेश किया। वहाँ पलंग पर पियु अपनी प्रिया का इन्तजार कर रहा था।विजय ने पलक पाँवड़े बिछा कर विजया का स्वागत किया।

ज्योंही विजया पास आई, विजय उसे झरोखे के पास ले गया। दोनों आसमान के तारे निहारने लगे। कृष्णपक्ष की बारहवीं रात्रि थी। आसमान में चाँद कहीं नजर नहीं आ रहा था।

विजय बोला — देखो विजया! अभी तक आसमान में चाँद नजर नहीं आ रहा है। कुछ समय बाद उसका उदय होगा; उस समय तुम देखना, वह कितना क्षीण काय

है।प्रातःकाल के समय तो वह बिलकुल फीका नजर आयेगा। रात्रि का अवसान चाँद की मृत्यु का द्योतक है।

चाँद रात में चमकता है; दिन में फीका पड़ जाता है; तो कमलिनी दिन में खिलती है और रात में मुरझा जाती है। मनुष्य के जीवन को देखो। वह भी इसी प्रकार का है। संयोग एक दिन वियोग में बदल जाता है। बचपन सदा नहीं रहता। जवानी बचपन को हजम कर जाती है और बुढापा जवानी को। आज की जवानी कल का बुढ़ापा है। शुक्लेन्दु दिन-दिन वृध्दिंगत होता है।पूनम के दिन सोलह कलाओं से शोभायमान होता है; पर कृष्णपक्ष में वही पूनमचंद अपना क्षयी नाम सार्थक करता है। अमावस्या की रात उसका कोई अस्तित्व ही दिखाई नहीं देता। यह जीवन भी एक दिन काल का ग्रास बनकर इसी प्रकार अस्तित्वहीन हो जाता है। जीवन में जितने भोग हैं, उतने ही रोग हैं।

ऐसा होते हुए भी हम अपने जीवन को चिरस्थायी बना सकते हैं। क्यों न हमारा मिलन भी ऐसा हो जाये, जिसमें न तुम मर सको और न मैं भी। हम कुछ ऐसा करें, जिससे हमारा यह मिलन सदा के लिए स्थायी बन जाये । न तुम्हें बुढ़ापा देखना पड़े और न मुझे भी बूढा होना पड़े। हम दोनों अपने सनातन रूप को प्राप्त कर लें। न तुम्हें संसार भोग के विषधर डसे और न मैं उनके पाश में बंधूँ। बोलो, क्या तुम ऐसा उपाय चाहती हो?

विजया अपने प्रियतम की सब बातें उस मिलन बेला में भी बड़े ध्यान से सुन रही थी। वह स्वयं समझदार थी। उसने देखा कि अपने प्रियतम की आँखों में वासना के स्थान पर शुध्द शील की जगमगाहट है। वह और भी सुनना चाहती थी, अतः अनभिज्ञता प्रकट करते हुए बोली — "नाथ! मैं आपकी ये रहस्यवाणी ठीक से समझ नहीं सकी हुँ। कृपया आप सब कुछ पुनः एक बार विस्तार से समझाइये।"

विजय की वाग्गंगा प्रवाहित हुई। वह बोला — तीर्थंकर परमात्मा जिस ज्ञान गंगा को प्रवाहित करते हैं, उसी ज्ञान जल का मैं तुम्हें आचमन करा रहा हूँ। तीर्थंकर और चक्रवर्ती भी जब अपने समस्त राजवैभव का त्याग कर संयम मार्ग ग्रहण कर लेते हैं; तब हम उस मार्ग से वंचित क्यों रहें? तीन काल में और तीन लोक में मुक्ति का मार्ग तो एक ही है और वह है सर्व संग परित्याग । सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इनकी एकरूपता ही मोक्ष मार्ग है। हम भी क्यों न इस रत्नत्रयीयुक्त संयम मार्ग को अपना लें?

मैंने सद्गुरू योग की प्राप्ति के पश्चात् भोगविलास को तिलांजलि देकर उनसे चतुर्थ अणुव्रत ग्रहण किया है। इस व्रत के अन्तर्गत मैंने कृष्ण पक्ष में सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन का व्रत ले रखा है। आज कृष्ण पक्ष की तेरहवीं रात है। आज हमारे मधुर मिलन का योग भी है। मैं तुम्हें कैसे सान्त्वना दूँ कि मैंने तुमसे विवाह कर तुम्हारे साथ अन्याय किया है। यदि तुम तीन दिन तक और प्रतीक्षा करो और मुझे क्षमा कर दो, मेरा मन काफी हलका हो जायेगा । तीन दिन के पश्चात् मैं पूरी तरह तुम्हारे प्रति समर्पित हूँ।

मैं अपने कर्म कल्मष को धोना चाहता हूँ। तुम्बी पर रही हुई मिट्टी पानी का स्पर्श पाते ही दूर हो जाती है; उसी प्रकार आत्मा का कर्म मैल भी शीलपालन से और व्रतपालन से दूर हो जाता है। मैंने स्वंय की आत्मा को विशुध्द करने के लिए कर्म मैल को ब्रह्मचर्य व्रत रूपी जल से धोने का निश्चय कर रखा है। कृष्ण पक्ष में मैं कभी भी तुम्हारे लिए उपयुक्त

नहीं बन संकूगा, कृपया मुझे क्षमा कर दो।

आज त्रयोदशी है। अमावस्या को कितने दिन शेष है। सिर्फ तीन दिन ही तो शेष हैं; तब तक के लिए तुम धैर्य धारण कर लो । यह समय देखते ही देखते बीत जायेगा और मेरे व्रत की भी रक्षा हो जायेगी।

विजय की बात पूरी हुई। उसके कारण आगन्तुक नवोढा की मेहन्दी की लाली,उसका श्रृंगार, उसके मन की आशाएँ सब पर उदासी छा गयी।जैसे एक साथ सब कमलिनियाँ मुरझा गयी हों, मरालिणी हंस को खो बैठी हो या कुमुदिनी पूनम की जगह अमावस्या को पाकर म्लान हो गयी हो; वैसे ही विजया का प्रसन्न मुख मण्डल एक दम मुरझा कर रह गया।उसका चेहरा उतर गया। किसी अज्ञात कालिमा से उसका मुख श्यामल दिखाई देने लगा । मुस्कराहट की जगह चेहरे पर गंभीरता छा गयी। उसके हृदय की गति कुछ तेज हो गयी। न जाने क्या अप्रत्याशित घटना घटने वाली है; इस आशंका से उसका मन शंकित हो गया। उसका गला कुछ रूँध-सा गया।

किन्तु विजया इसलिए उदास नहीं थी कि प्रिय ने व्रत धारण किया हुआ है। उसे चिन्ता थी कि अब अपने व्रत का क्या होगा।शुक्ल पक्ष में ब्रह्मचर्य पालन का उसका व्रत जो था। वैसे स्व-पर के भेदज्ञान के कारण ज्ञानवान लोग तृष्णाओं के क्षय होने पर उदास नहीं होते; अपितु पूर्णानन्दी होते हुए वे अधिक विकासमान होते हैं। उनकी आत्मा में दीनता नहीं प्रसन्नता होती है। कहा भी है—

जागर्ति ज्ञानदृष्टिर्चेत् पूर्णानन्दस्य तत्किं स्याद्दैन्य वृश्चिक वेदना।

विजय की सब बाते विजया ने ध्यानपूर्वक सुनी। फिर उसने कहा — "कृष्ण पक्ष में शील पालन का व्रत लेकर आपने अपने जीवन को धन्य बनाया है, उसी प्रकार मैं भी शुक्ल पक्ष में शीलपालन का व्रत पहले से ग्रहण कर चुकी हूँ। अत: मैं आपकी पत्नी होते हुए भी शुक्ल पक्ष में भी मैं आपके काम की नहीं हूँ। आप मेरी मज़बूरी समझिये और मुझे क्षमा किजिये। आप अन्य विवाह करके अपने जीवन को सुखमय बनाइये। और मुझे संयम मार्ग का पूर्ण रूप से वरण कर अपने जीवन को धन्य बनाने का अवसर प्रदान कीजिये। आपकी शुभकामना मेरा संबल होगी। नाथ! नाथ! कृपया मुझे क्षमा करें।"

किसी को मनचाहा मिलने पर जो प्रसन्नता होती हैं वही प्रसन्नता विजय को विजया की बातें सुनकर हुई। विजय के मुखमंडल पर सन्तोष और प्रसन्नता की एक अलौकिक आभा छा गयी। वह बोला — "प्रिये! हम कितने भाग्यशाली है! एक मार्ग के पथिक संयोग से एक ही नाव में बैठ गये हैं। अब हमारी यह यात्रा अवश्य ही हमें विजय प्राप्त करायेगी। हाथ में आया चिन्तामणि रत्न अब न तो तुम्हें ही छोड़ देना है और न मुझे ही। हम दोनों ही अपने रत्न को सम्हाल कर रखेंगे। भोग सुख तो अनित्य है और आत्मसुख नित्य। ऐसा कौन मूर्ख होगा, जो नित्य को छोड़ कर अनित्य की ओर हाथ फैलायेगा। कहा भी है—

भोगसुखैः किमन्यैः, भयबहुलैः काङ्क्षितैः परायत्तैः।
नित्यमभयमात्मस्थं, प्रशम सुखं तत्र यति तव्यं।। १।।

यावत्स्व विषय लिप्तो, रक्ष समूहस्य चेष्ट्यते तुष्टौ।
तावत्तस्यैव जये वरतरमशठं कृतो यत्नः ।। २ ।।

भोग सुख अनित्य तो हैं ही, पर भय से भी भरे हुए हैं। ये आसक्तिपूर्वक भोगे जाते हैं, पराधीन हैं। ऐसे अनेक दोषों से परिपूर्ण भोग सुखों की क्या आवश्यकता है? आवश्यकता है प्रशम सुख की, जो अविनाशी, निर्भय तथा स्वाधीन भी है।

ये इन्द्रियाँ इतनी विषय लंपट हैं कि इनकी माँग शराबी की शराब के समान कभी पूरी होती ही नहीं। अतः इनका दमन करना ही इन्हें जीतने का सही उपाय है। इस ओर तुम्हारा भी प्रयत्न है, और मेरा भी। अतः अब मैं पुनः विवाह क्यों करूँ। मुझे इससे लाभ तो कुछ भी नहीं है, पर हानि की संभावना ही अधिक है।

तुम्हारे समान चारित्रवान पत्नी की मुझे प्राप्ति हुई है। अब मैं पारस छोड़ पत्थर के पीछे क्यों लगूँ? दूसरा विवाह करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है।

ज्ञान के मानसरोवर में विहार करनेवाले मरालयुगल हम अब कहाँ किसी सरोवर में विहार करें। हमारे लिए अब यह उचित नहीं है। कहा भी है—

मज्जत्यज्ञः किलाज्ञाने विष्ठायामिव शूकरः।
ज्ञानी निमज्जति ज्ञाने मराल इव मानसे।।

भोगी जीव ही शूकर के समान विषयविष्ठा का उपभोग लेते है। ऐसे अज्ञ जीव सचमुच अज्ञान में ही आकंठ डुबे हुए रहते हैं; पर ज्ञानी ज्ञान सागर में गोते लगाता है; वैसे ही जैसे राजहंस मानसरोवर में। वह अन्त में मोक्ष सुख की शाश्वत लब्धि प्राप्त करता है। अतः अब तुम भोग का मोह ज़रा भी मत रखो।

परमात्मा ने हम दोनों का मार्ग पहले से ही प्रशस्त कर रखा है। अतः अब हम दोनों अपने-अपने नियम में ही दृढ रहें; यही हमारे लिए उचित है। कहा भी है —

निरन्तरं विचारो यः, श्रुतार्थस्य गुरोर्मुखात्।
तन्निदिध्यासनं प्रोक्तं, तच्चैकाग्रेण लभ्यते।।

गुरूमुख से जो भी श्रुतार्थ प्राप्त हो; उसका निरन्तर चिन्तन, मनन और निदिध्यासन करना चाहिये। अतः अब हम दोनों गुरूप्रदत्त व्रत का निश्चलता से पालन करें तथा साथ साथ ही संयम ग्रहण कर इस संसार समुद्र से पार हो जायें। पर अभी नहीं। इसके लिए अभी कुछ समय बाकी है।"

विजय के इन उदात्त विचारों से विजया बहुत प्रभावित हुई। वह बोली — "प्राणनाथ"! आप सचमुच मेरे परम उपकारी हैं। रथ वही गतिमान होता है; जिसके दोनों पहिये समान हों और अश्व भी एक समान हों। समान अश्व एक दूसरे की कमजोरी में स्वयं संबल बन जाते हैं। यदि एक निर्बल भी हो जाये; तो दूसरा उसे सहारा दे कर सबल बना देता है।

आप कहते हैं कि संयम ग्रहण में अभी देर है; पर प्राणनाथ ! आग के पास घी का घड़ा कब तक सम्हाले फिरोगे? यह संसार बड़ा विचित्र है। इससे नित नूतन घटनाओं से जीव आकुल व्याकुल होता रहता है। यह मन का घोड़ा बड़ी मुश्किल से काबू में आता है।

पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, तप-मोक्ष; इन सब में मन ही प्रधान रूप से कारण रहता है। अतः इसे वश में करने के लिए लंबी प्रतीक्षा करना माल को चौराहे पर रखकर घोड़े बेचकर सोने जैसा है।

यह मन बहुरंगी है, बहुढंगी है। बाह्याभ्यन्तर इच्छाओं के वशीभूत हो कर यह मन न जाने कब बिगड़ जाये और संसार में धकेल दे। अतः आत्म तत्व को सम्यक् जान कर संसार त्याग में शीघ्रता करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। क्योंकि ' श्रेयांसि बहुविघ्नानि' कल्याण के मार्ग बाधाऐं अनेक आती हैं।अतः सर्व विरति चारित्र के लिए हमें शीघ्र उद्यमवान होना चाहिये। बाद में दीक्षा लेने का विचार छोड़ देना चाहिये। कल किसने देखा है ? कल का क्या भरोसा ?'आज' हमारे पास है। इसकी हत्या होने से पहले इसका उपयोग कर लो; क्योंकि आनेवाला कल इसकी हत्या करनेवाला है। वह इसका हत्यारा है। अतः ज्ञानगर्भित वैराग्य रखते हुए हमें शीघ्रातिशीघ्र संयम ग्रहण कर लेना चाहिये। कहा भी है —

एतत्तत्व परिज्ञानान्नियमेनोपजायते।
यतोऽतः साधनं सिध्देरेतदेवोदितं जिनैः ।।

यह वैराग्य ही सिध्दि का परम साधन है,ऐसा जिनेश्वर भगवन्तों का कथन है।''

भव्य जनो। जरा आत्मविश्लेषण तो कर देखो । जो प्रेमीयुगल सुखी विवाहित जीवन जीने के लिए निकला था; वह अपने अरमान और अपनी आकांक्षाओं का बलिदान कर संयम मार्ग का निर्णय कर बैठा।धन्य है, इसकी आत्मविजय।

उनके इस निर्णय का पूर्व जन्म के कर्मोदय के साथ-साथ दृढ़ इच्छाशक्ति भी एक कारण है। जब मनुष्य श्रेष्ठ साध्य के लिए संकल्प कर बैठता है; तो सफलता उसके चरण चूमने लगती है। उसके मार्ग की बाधाएँ अपने आप दूर हो जाती हैं और विरोधी उसके सहयोगी हो जाते है। यदि संकल्प दृढ़ हो, तो सफलता प्राप्त होती ही है।

इस प्रेमी युगल ने किसी को अपने व्रत नियम की खबर तक नहीं पड़ने दी। संसार में रह कर भी वह त्यागी बना रहा। धन्य है इसे।

नहीं तो संसार में सड़ते हुए, भोग रोग से आक्रान्त होते हुए तथा नानाविध पीड़ाओं से ग्रस्त होते हुए भी लोग योग तथा शीलपालन के लिए तैयार नहीं होते। बड़ा कठिन काम है यह।लोहे के चने चबाना या असिधार पर चलना सहज है; पर शील धारण कर उसका निर्वाह करना कठिन है। संसार रसिक युगल के दरवाजे यदि कोई साधु भुल से शीलव्रत देने चला जाये; तो साधु घर में और भव्य बाहर या भव्य घर में और साधु बाहर , ऐसी दोनों की आँख-मिचौली चलने लगती है। जब वह साधु अन्यत्र विहार कर जाता है; तब कहीं उस गृहस्थ को शान्ति प्राप्त होती है।सोचता है..... 'चलो, जान बची लाखों पाये। 'साधु मुनिराज उसकी अज्ञानता पर तरस खाते हुऐ, उसे दयनीय समझकर उसे छोड़ जाते हैं।

(शेष अगले अंक में)

कविता

जरा प्रेम की गंगा में नहाने दो मुझे

किसी रुठी हुई किस्मत को मनाने दो मुझे।
किसी दिल-देहरी पर दीप जलाने दो मुझे।
घृणा की गन्दी नालियों में खूब जी लिए,
जरा अब प्रेम- की गंगा में नहाने दो मुझे।

किसी रोते हुए इन्सां को हंसाने दो मुझे।
किसी के सोते भाग्य को भी जगाने दो मुझे।
जीते हैं जो जीवन को एक बोझ समझकर,
उन्हें जीने- की- कला भी तो सिखाने दो मुझे

किसी दुखिया के लिए सेज सजाने दो मुझे।
किसी के गीले नयन पौंछने जाने दो मुझे।
फूलों के संग बहुत रास रचा देख चुके हम,
आज शूलों से भी तो हाथ मिलाने दो मुझे।

किसी गमगीन को बीन सुनाने दो मुझे।
किसी मदहोश को होश में लाने दो मुझे।
जीते हैं जो गैरो का जीवन उजाड़ कर,
"जिओ-व जीने दो" का पाठ पढ़ाने दो मुझे।

किसी भटके हुए को राह दिखाने दो मुझे।
किसी कैदी को कैद से मुक्त कराने दो मुझे।
पूजा है अब तक प्रस्तरो को देव मानकर,
आज किसी दीन की पूजा भी रचाने दो मुझे।

मुनि श्री तरुण सागरजी

पथ के प्रदीप

अनेक लोग इस भ्रम में जीते हैं
कि वे बहुत बोलकर
सामने वाले को प्रभावित कर रहे हैं
दरअसल, बहुत बोलने वाले
प्रभावहीन लगते हैं
और जो कम बोलते है,
वे औरों को आसानी से
प्रभावित कर जाते है
ज्यादा बोलना महत्त्वहीनता है
कम बोलना प्रभाविकता है
अधिक बोलकर व्यक्ति अपनी
कमजोरी और आत्मविश्वास का
अभाव बतलाता है
कम बोलने वाला निर्भय और दृढ़ होता है
जो ज्यादा बोलते हैं
वे बकवास अधिक करते है
वे बहुत बोलकर भी कुछ नहीं कर पाते,
परन्तु जो कम बोलते हैं,
वे ठोस और गजब बोलते हैं
वे जरा-सा बोलकर भी बहुत कह जाते हैं

मुनि विमलसागर

"श्री शांति जिन स्तवन" (१६)

विवेचन : मुनिराज श्री जयानंदविजयजी म.

शान्त रसे श्री शांति जिन, पियु मोरा शांति सुख शिरदार हो ।
प्रेमे पाम्यो प्रीतड़ी पियु मोरा, प्रीति नी रीति अपार हो ।
शांत सलुणो मारो, प्रेम नगीनो मारो, स्नेही समीनो मारो,
नाहलो पियु मोरा पल एक प्रीति पमाड़ हो । टेर ॥ १ ॥

श्री शांति जिनेश्वर शांत रस में निमग्न है । शांत रस में निमग्न होने से हे प्रीतम ! आप शांति सुख भोक्ताओं में सर्वश्रेष्ठ सरदार हो । सर्वोत्तम हो । आपके जैसा शांति सुख को भोगने वाला अन्य कोई नहीं है ।

हे श्री शांतिनाथ भगवंत आपके प्रति मेरे हृदय में रहे हुए प्रेम के कारण आपकी प्रीत मैंने प्राप्त की । आपके प्रीत की रीत अपार है जिसका कोई पार पा नहीं सकता । भव्यात्माएँ अनेक प्रकार से आपके साथ प्रीत करते हैं ।

हे शांतिनाथ भगवंत आप मेरे हो, मेरे लिए प्रेम के एक मात्र स्थान रूप हो, स्नेही हो, नाथ हो ।

हे शांतिनाथ भगवंत ! प्रीत दो प्रकार की है एक सामान्य एवं दूसरी विशिष्ट । सामान्य प्रीति तो आपसे मेरी है ही । अब आपसे निवेदन करता हूँ कि एक पल भर विशेष प्रीति प्राप्त करवा दो ।

प्रीति प्रभु तुम प्रेमनी, पि. मुज मन में नहीं माय हो ।
भेद न जाणुं अभेदता, पि. प्रेम शुं रह्यो लपटाय हो । शांति ॥ (२)
भेद कहो किम संभवे, पि. जड़ता दोष जणाय हो ।
जुक्ति जड़ जंपे नहीं, पि. कहितां किम कहेवाय हो । शांति ॥ (३)
अभेद रूप जो अनुभवुं, पि. सिद्ध संसारी संबंध हो,
प्रत्यक्ष भिन्न प्रमाण में, पि. किम करी कहुं एक खंध हो, शांति ॥ (४)
उभय पक्ष उपयोगथी, पि. भिन्न भलो भ्रम जाल हो ।
सूरि राजेन्द्र ना साहिबा, पि. मेटजो मन भ्रम साल हो । शांति ॥ (५)

हे शांतिनाथ भगवंत ! आपके प्रति मेरे हृदय में इतनी प्रीत है कि उसका समावेश मेरे छोटे से मन में नहीं हो रहा है । एक किलो पदार्थ का समावेश हो सके ऐसे बर्तन में पांच किलो पदार्थ कैसे आ सकेगा ? वैसे ही प्रीत अधिक है और मन छोटा है अतः आपश्री की प्रीत मेरे मन में समाविष्ट नहीं हो रही है ।

आपके प्रति इतनी अत्यधिक प्रीत होने के कारण आपका और मेरा भेद-अभेद जो है वह मैं नहीं जानता । फिर भी आप श्री के प्रेम के कारण आपसे लिपटा हुआ हूँ ।

आत्मा एवं पुद्गल में भेद है । आत्मा सचेतन है, पुदगल जड़ है ।

मैं, आप में और मुझ में भेद कहने जाता हूँ तो जड़ता का आरोप आप में आ जाता है । जड़ कभी युक्ति बता नहीं सकता, जड़ कभी कुछ कह नहीं सकता । अतः मैं आपको जड़ कह नहीं सकता । जड़ न कह सकने के कारण आपमें और मुझ में भेद है ऐसा मैं नहीं कह सकता ।

अभेद रूप में जो अनुभव करूं तो आप सिद्ध है, मैं संसारी हूँ यह प्रत्यक्ष प्रमाण भिन्नता का है । आप और मैं एक स्कंध रूप है ऐसा मैं कैसे कह सकूं ? मैं अभेद रूप से भी नहीं कह सकता ।

गुरूदेव श्री कहते है कि चिंतन करने पर स्पष्ट ख्याल आया कि शुद्ध निश्चय नय एवं शुद्ध व्यवहार नय से आप और मैं क्रमशः अभेद युक्त एवं भेद युक्त हैं ।

भिन्नता तो केवल भ्रम जाल है । अर्थात् शुद्ध निश्चय नय से आप और मैं सत्ता स्वरूप से एक समान हैं कोई भेद नहीं है, अभेद ही है ।

हे तीर्थंकर शांतिनाथ भगवंत ! आप मेरे मन से इस भ्रम रूप कांटे को दूर कर दे, भ्रम के दुःख को मिटा दे । अर्थात् व्यवहार नय से भिन्नता का जो स्वरूप है वह पुद्गल की संगतता के कारण है आपश्री मुझ से पुद्गल का संग छुड़वाकर अभेद में मिला दीजिये । यही आप से मेरी प्रार्थना है ।

गुरूदेव श्री ने इस स्तवन में सुख भोक्ताओं के उत्कृष्ट स्वामी तीर्थंकर एवं सिद्ध भगवंतो को दर्शाकर निश्चय एवं व्यवहार से भेद अभेद की व्याख्या समझा कर व्यवहार से रहे हुए भेद को मिटाने हेतु, दूर करने हेतु भगवंत से प्रार्थना की है ।

श्री दक्ष ज्योत

ભારતીય સંસ્કૃતિના આદર્શોને ઘર ઘર
ગુંજતા કરવાના ઉદ્દેશથી પ્રકટ થતું આધ્યાત્મિક માસિક

તંત્રી મહેશભાઈ એફ શેઠ ● સંપાદક : મુકેશ કે. શાહ

શ્રી દક્ષ જ્યોત મનને-આત્માને પુષ્ટિ કરે છે.

આજીવન સભ્ય રૂ. ૫૦૧/- ● વાર્ષિક લવાજમ રૂ. ૫૧/-

● દક્ષ જ્યોત કાર્યાલય ●
પાર્શ્વનગર ચાલપેઠ રોડ, અગાસી તીર્થ, વાયા - વિરાર,
પીન. ૪૦૧ ૩૦૧ જી. થાણા, મહારાષ્ટ્ર

क्या आप जानते हैं कि

- दिल्ली के वरिष्ठ सर्जन डाक्टर आर. एन. मित्तल के अनुसार हमारे देश में बड़ी आंत का केंसर मांसाहारी लोगों में अधिक देखा जाता है।
- तम्बाकू सेवन के परिणामों की ढेरों चेतावनियों के बावजूद आज भी १२ लाख लोग हर साल तम्बाकू सेवन के शिकार होकर मर जाते हैं।
- ६५ साल से कम उम्र के लोगों में ४० प्रतिशत कैंसर, ७५ प्रतिशत दमा और २५ प्रतिशत हार्ट अटैक से हुई मौतें धूम्रपान के कारण होती है।
- अनुमान है कि भारत में लगभग ३३ करोड़ लोग तम्बाकू का सेवन करते हैं और रोजाना ५५ करोड़ या हर साल २०,००० करोड़ सिगरेटों की बिक्री केवल भारत में ही होती है।
- भारत में लगभग साढे चार लाख हेक्टेयर भूमि में तम्बाकू की खेती की जाती है और हर साल यहाँ चवालीस करोड़ किलो तम्बाकू की पैदावार होती है। इस तरह विश्व में तम्बाकू उत्पादन के लिहाज से भारत तीसरे स्थान पर है। मगर विडम्बना यह है कि इसमें से सिर्फ २० प्रतिशत तम्बाकू का निर्यात होता है, शेष भारत में ही खप जाती है।
- भारत वर्ष में १० वर्ष से अधिक की आयु वाले लोगों में २२ करोड़ पुरूष और ११ करोड़ महिलाएं धूम्रपान करती हैं और इस वक्त लगभग पांच लाख रोगी सिगरेट के कारण हुए कैंसर से पंजीकृत हैं।
- अगर सिगरेट की किमत केवल एक पैसा बढ़ा दी जाए तो सिगरेट बनाने वाली कम्पनियों को हर साल लगभग २०० करोड़ रुपये का लाभ होता है।
- प्रतिवर्ष धुम्रपान से डेढ़ करोड़ कार्य दिवसों की हानि होती है।
- धरती के चारों तरफ ओजोन गैस की एक पर्त है, जो सूरज की रोशनी के साथ आनेवाली पराबैंगनी किरणों को सोख कर उन्हें पृथ्वी तक नहीं पहुंचने देती। ये मारक किरणें अगर हमारे शरीर पर लगातार चोंट करें तो चर्म कैंसर, मोतियां बिन्द और अन्य कई बीमारियॉ हो सकती है।
- बाहरी वायुमंडल में ओजोन की पर्त के हल्के होने के साथ–साथ दुनियाँ भर में चमड़े के कैंसर की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं और यह वृद्धि सबसे अधिक अंटार्कटिका के नजदीक के इलाकों में है। जहॉ ओजोन की छतरी में बहुत बड़ा छेद हो गया है।
- पिछले सौ साल से धरती का औसत तापमान ०.३ से ०.६ डिग्री सेल्सियस बढा है और इस समय तापमान बढ़ने की दर ०.३ डिग्री सेल्सियस प्रति दशक है।

- गाय के दूध में पाया वाला प्रोटीन स्तन कैंसर वृद्धि को धीमा कर देता है। गाय का दूध सेवन करनेवालों को कैंसर का भय नहीं रहता।
- जर्मन में वैज्ञानिकों ने ११ वर्ष तक १९०४ शाकाहारियों का अभ्यास कर यह निष्कर्ष निकाला है कि मांसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारी ज्यादा तंदुरुस्त एवं दीर्घायु होते है।
- दुनियाँ भर में हर साल लगभग दो करोड़ हेक्टेयर उपजाऊ भूमि खेती के आधुनिक तौर तरीकों के चलते–चलते रेगिस्तान में बदल जाती है।
- कृषि में कीटनाशी रसायनों और रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग ने भी मिट्टी को प्रदूषित किया है।
- अमेरिका में ८० के दशक में फौज पर २,५००,०००,०००,०००,०००,००० (ढाई ट्रिलियन) डालर खर्च किए गए हैं, जब कि इसी दौरान शहरों और राज्यों के विकास के लिए संघीय फंड में ७८ अरब डालर की कटौती की गयी।
- सिंगापुर में च्युइंगम खाने एवं बेचने पर प्रतिबंध है।
- २४ करोड़ ४ लाख की जनसंख्या वाला अमेरिका मांस प्राप्ति हेतु जानवरों को अन्न और सोयाबीन खिलाना बन्द कर दे तो दुनिया के एक अरब तीन करोड़ लोगों को भूखमरी से बचाया जा सकता है।
- मांस उत्पादन के अर्थतन्त्र का क ख ग भी जो लोग जानते हैं, वे आंखे मूंद कर कह सकते हैं कि मांसाहारी मुल्क दुनिया को भूखा मारने के लिये जिम्मेदार है।
- विश्व में सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलानेवाला देश अमेरिका है।
- चाय में टैनिन नामक पदार्थ भी पाया जाता है, जिसमें विशेष प्रकार की गंध और स्वाद आता है। टैनिन पानी में घुलनशील एक विषैला पदार्थ है, जिसके प्रभाव से आमाशय की पाचनशक्ति नष्ट हो जाती है तथा कभी–कभी आमाशय की दिवारों में घाव भी हो जाते हैं। भूख न लगना, निंद न आना, बैचेनी तथा सिर के बालों का समय के पूर्व गिरना या श्वेत होना, होठ काले तथा चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाना आदि चाय के दुष्परिणाम हैं।
- कीटनाशी दवाओं का आँख और हड्डियों पर काफी गंभीर प्रभाव पडता है, सिर्फ इतना ही नहीं वरन् इससे कहीं अधिक गंभीर रोग (लीवर में कैंसर) की आशंका भी उठ खड़ी होती है।

– धर्ममित्र.

जब तपमान शून्य डिग्री से नीचे चला जाता है तो जीवन दूभर हो जाता है, वैसे ही समाज के अधिकांश लोग नैतिक मानबिन्दु के नीचे खिसक जाते हैं तो समाज की स्वस्थता खतरे में पड़ जाती है।

धारावाहिक—

।। 卐 ।। आचाराङ्ग की सूक्तियाँ ।। 卐 ।।

संकलन-श्री पुखराज भण्डारी

(८७) **'एस धम्मे सुद्धे णितिए सासए समेच्च लोयं खेतण्णेहिं पवे दिते।। १-४-१-१३२।।'**

● **यह अहिंसा धर्म शुद्ध, नित्य और शाश्वत है। सर्वज्ञ अर्हन्तों ने (जीव) लोक सम्यक् प्रकार से जानकर इसका प्रतिपादन किया है।**

(८८) 'णो लोगस्सेसणं चरे।। १-४-१-१३३।।'

● वह लोकैषणा में न भटके।

(८९) **' जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा।**
जे अणासवा ते अपरिस्ससा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा।। १-४-२-१३४।।'

● जो **आस्रव** (कर्मबंध) के स्थान हैं, वह ही **परिस्रव**-कर्म निर्जरा के स्थान (ज्ञानियों के लिए) बन जाते हैं। इसी प्रकार जो परिस्रव हैं, वे आस्रव हो जाते हैं। जो **अनास्रव** (व्रतविशेष) हैं, वे भी (अशुभ अध्यवसाय वालों के लिए) **अपरिस्रव** (कर्म के कारण) हो जाते हैं। इसी प्रकार **परिस्रव** (पाप के कारण) हैं, वे भी (कदाचित) **अनास्रव** (कर्मबंध के कारण) नहीं होते हैं।

तुलना— 'अज्ञानी बध्यते यत्र, सेव्यमानेऽक्षगोचरे।
तत्रेव मुच्यते ज्ञानी, पश्यतामाश्चर्यमीदृशम।।'

आचार्य अमितगति—'योगसार' -६/१८

(९०) **'अट्टा वि संता अदुवा पमत्ता।। १-४-२-१३४।।'**

● जो आर्त अथवा प्रमत्त (विषयासक्त) होते हैं, वे भी (कर्मों का क्षयोपशम होने पर अथवा शुभ अवसर मिलने पर) धर्म का आचरण कर सकते हैं।

(९१) **'णाऽणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि।। १-४-२-१३४।।'**

● जीवों को मृत्यु के मुख में (कभी) जाना नहीं होगा, ऐसा संभव नहीं है।

(९२) **'एगे वदंति अदुवा वि णाणी, णाणी वदंति अदुवा वि एगे।। १-४-२-१३५।।'**

● यह बात श्रुतकेवलि या केवलज्ञानी कहते हैं। जो केवलज्ञानी कहते हैं, वही श्रुतकेवलि भी कहते हैं।

(९३) **'सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूताणं सव्वेसिं जीवाणां सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खति-त्तिबेमि।। १-४-२-१३९।।'**

● जैसे आपको दुःख प्रिय नहीं है, वैसे ही सभी प्राणी, भूत, जीव सत्वों को भी दुःख आशाताकारक है, अप्रिय है, अशान्तिजनक है और महाभयंकर है।—ऐसा मैं कहता हूँ।

(९४) **'इह आणाकंखी पंडिते अणिहे एगमप्पाणं सपेहाए धुणे सरीरगं, कसेहि अप्पाणं जरेहि अप्पाणं। जं हा जुन्नाई कट्ठाई हव्ववा हो पमत्थति एवं अत्त समाहिते अणिहे।। १-४-३-१४१ ।।'**

● यहाँ (अर्हत्प्रवचन में) आज्ञाकांक्षी पंडित (शरीर और कर्मादि के प्रति) अनासक्त (स्नेहरहित) होकर एकमात्र आत्मा को देखता हुआ, शरीर (कर्मशरीर) को प्रकम्पित कर डाले। (तपश्चरण द्वारा) अपने कषाय आत्मा (शरीर) को कृश करे, जीर्ण कर डाले। जैसे अग्नि काष्ठ को शीघ्र जला डालती है, वैसे ही समाहित आत्मा वाला वीतराग पुरुष प्रकम्पित, कृश एवं जीर्ण हुए कषायात्मा (कर्मशरीर) को (तपध्यान रूपी अग्नि से) शीघ्र जला डालता है।

(९५) **'विगिंच कोहं अविकंपमाणे इमं निरुद्धाउयं सपेहाए।। १-४-३-१४२ ।।'**

● यह मनुष्य जीवन अल्पायु है, यह सम्प्रेक्षा करता हुआ साधक अकम्पित रहकर क्रोध का त्याग करे।

(९६) **'लोयं च पास विप्फंदमाणं।। १-४-३-१४२ ।।'**

● प्राणिलोक को (दुःख के प्रतिकार के लिए) इधर उधर भागदौड़ करते-**विस्पन्दित** होते देख!

(९७) **'विगिंच मंससोणितं।। १-४-४-१४३ ।।'**

● संयम और मोक्षमार्ग में विघ्न करनेवाले शरीर का मांस और रक्त (विकट तपश्चरण द्वारा) कम कर।

(९८) **'जस णत्थि पुरे पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया ? ।। १-४-४-१४५ ।।'**

● जिसके (अंतःकरण में भोगासक्ति का-) पूर्व संस्कार नहीं है, और पश्चात् (भविष्य) का संकल्प भी नहीं है, बीच में उसके (मन का विकल्प) कहाँ से होगा?

(९९) **'जेणबंधं वहं घोरं परितावं च दारुणं।। १-४-४-१४५ ।।'**

● (भोगासक्ति के कारण) पुरुष बन्ध, वध, घोर परिताप एवं दारुण दुःख पाता है।

(१००) **'कम्मुणा सफलं दट्ठं तणो णिज्जाति वेदवी।। १-४-४-१४५ ।।'**

● कर्म अपना फल अवश्य देते हैं, यह देखकर ज्ञानी पुरुष उनसे (बंध, आम्रव, संचय) अवश्य ही निवृत्त हो जाता है।

(१०१) **'गुरु से कामा। ततो से मारस्स अंतो। जतो से मारस्स अंतो ततो से दूरे।। १-५-१-१४७ ।।'**

● प्रमत्त जीव के लिए शब्दादि काम (विपुल विषयेच्छा) का त्याग करना बहुत कठिन होता है। इसलिए वह मृत्यु की पकड़ में रहता है। जितना मृत्यु की पकड़ में रहता है, उतना ही **अमृत (परमपद)** से दूर होता है।

(१०२) **'णेव से अंतो णेव से दूरे।। १-५-१-१४८ ।।'**

● वह (कामनाओं का निवारण करने वाला पुरुष) न तो मृत्यु की सीमा (पकड़) में रहता है, और न मोक्ष से दूर रहता है (**जीवनउन्मुक्त** की स्थिति में रहता है)।

(१०३) **'मोहेण गब्भं मरणाइ एति। एत्थ मोहे पुणो, पुणो॥ १-५-१-१४८॥'**

● उस मोह (मिथ्यात्व, कषाय, विषय, कामना) से (उद्भ्रान्त होकर कर्मबन्धन करता हुआ) बार बार गर्भ में आता है, जन्म-मरणादि पाता है। इस जन्म-मरण की परम्परा में (मिथ्यात्वादि के कारण) उसे बारंबार मोह (व्याकुलता)उत्पन्न होता है।

(१०४) **'संसयं परिजाणतो संसारे परिण्णाते भवति।**
संसयं अपरिजाण तो संसारे अपरिण्णाते भवति॥ १-५-१-१४९॥'

● जिसे संशय (मोक्ष और संसार के विषय में जिज्ञासा) का परिज्ञान हो जाता है, उसे संसार के स्वरूप का परिज्ञान हो जाता है। जो **संशय/जिज्ञासा** को नहीं जानता, वह संसार को भी नहीं जान पाता।

(१०५) **पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे। एत्थ फासे पुणो पुणो॥ १-५-१-१४९॥'**

● हे साधको! विविध काम भोगों में गृद्ध-आसक्त जीवों को देखो। वे नरक तिर्यंच आदि यातना स्थानों में पच रहे हैं, उन्हीं विषयों में खिंचे जा रहे हैं। वे इन्द्रियविषयों के वशीभूत प्राणी इस संसार-प्रवाह में (कर्मों के फलस्वरूप) बारंबार उन्हीं स्थानों का स्पर्श करते हैं। उन्हीं स्थानों में पुनः पुनः जन्मते मरते हैं।

(१०६) **'अट्टापया माणव! कम्मकोविया, जो अणुवरता अविजाए पलिमोक्ख माहु, आवट्टं अणुपरियट्टंति त्ति बेमि॥ १-५-१-१५१॥'**

● हे मानव! जो लोग **प्रजा (विषय कषाय)** से आर्त-पीड़ित हैं, कर्मबन्धन करने में ही चतुर हैं, जो आस्रवों से विरत नहीं हैं, जो अविद्या से मोक्ष प्राप्त होना बतलाते हैं, वे संसार के भँवरजाल में बराबर चक्कर काटते रहते हैं। —ऐसा मैं कहता हूँ।

(१०७) **'आवंति के आवंति लोगंसि अणारंभजीवी एतेसु चेव अणारंभजीवी॥ १-५-२-१५२॥'**

● इस मनुष्यलोक में जितने भी **अनारम्भजीवी** (अहिंसा के पूर्ण आराधक) हैं, वे (इन सावद्य-आरंभ प्रवृत्त) गृहस्थों के बीच रहते हुए भी **अनारम्भजीवी** (विषयों से निर्लिप्त-अप्रमत्त) रहते हुए जीते हैं।

(१०८) **'एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते॥ १-५-२-१५२॥'**

● यह (अप्रमादका) मार्ग आर्यों ने (तीर्थंकरों) बताया है।

(१०९) **'से पुव्वं पेतं पच्छा पेतं भेउरधम्मं विद्धंसणधम्मं अधुवं अणितियं असासतं चयोवचइयं विप्परिणाम धम्मं। पासह एयं रूवसंधिं॥ १-५-२-१५३॥'**

● यह प्रिय लगने वाला शरीर पहले या पीछे (एक न एक दिन) अवश्य छूट जायगा। इस **रूपसंधि (देह-स्वरूप)** को देखो! छिन्न भिन्न और विध्वंस होना इसका स्वभाव है। यह अध्रुव, अनित्य, अशाश्वत है। इसमें चयउपचय होता रहता है। विविध परिवर्तन होते रहना इसका स्वभाव है।

आओ! सूरज से कुछ प्रेरणा लें!

[मुनि श्री रत्नसेनविजयजी]

प्रातःकाल की मधुर वेला में अपनी लालिमा को फैलाकर समूचे विश्व को अपने प्रकाश से आलोकित करनेवाले सूरज को भला किसने नहीं देखा होगा?

एक ही सेकंड में करोड़ों की जोड़–बाकी करनेवाला कम्प्युटर शायद कभी भूल कर सकता हैं। दुनिया को चकित करनेवाला 'यंत्र मानव' अपने कार्य और निर्णय में भूल कर सकता है। नियमबद्धता (Panchuality) की बांग पुकारनेवाला मानवी कदाचित् अपने समय में भूल कर सकता है––– परंतु हजारों वर्ष बीतने के बाद भी यह सूरज अपने उदय और अस्त के समय में एकदम नियमित रहा है।

वर्षों बीतने पर जवान व्यक्ति बुढा हो जाता है और उसकी कार्यशक्ति एकदम क्षीण हो जाती है। एक घंटे में ५–७ मील की स्पीड (Speed) से दोड़ने वाला व्यक्ति बुढापे में ५–१० कदम चलने में भी थकावट का अनुभव करने लग जाता है।

सचमूच, जब सूरज की ओर दृष्टिपात करता हूँ तो लगता है वह अपने कार्य में कितना नियमित है।

सूर्य की नियमितता हमें अपनें जीवन को नियमबद्ध बनाने की सुंदर प्रेरणा देती है।

दुनिया में कई लोग ऐसे होते है, जिनका जीवन एकदम अस्त–व्यस्त होता है। न खाने में नियमितता – न श्रम में और न विश्राम में नियमितता।

जीवन के अभ्युत्थान के लिए नियमबद्धता अत्यंत ही आवश्यक तत्व है।

कभी सुबह भरपेट खाया तो कभी दोपहर को तो कभी रात को। इस प्रकार आहार में अनियमित रहनेवाले व्यक्ति आहार का संतुलन खो देने से अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त बनते है।

कभी अत्याधिक श्रम तो कभी बिल्कुल श्रम नहीं। इस प्रकार श्रम के क्षेत्र में अनियमित रहने से स्वास्थ्य का संतुलन टूटने लगता है।

जो व्यक्ति कभी दिन में घंटों तक सोते हैं और पूरी रातभर जगते रहते हैं– कभी रात को सोते है तो कभी दिन को। इस प्रकार विश्राम में अनियमित रहनेवाले अपने शारीरिक और मानसिक विकास को अवरूद्ध कर देते हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र में भी नियमबद्धता का बहुत ही महत्त्व है। नियमित रूप से जाप, नियमित रूप से ध्यान, नियमित रूप से स्वाध्याय इत्यादि करने से क्रमिक

विकास होता रहता है। जो लोग बंदर की भांति छलांग लगाते हैं तो वे कभी ऊँचे चढते है तो कभी नीचे भी गिर जाते हैं।

यह सूरज हमें बहुत ही सुंदर प्रेरणा देता हैं। जीवन को नियमित बनाओ। कोई; भी कार्य समय पर करो और नियमित करो तभी वह कार्य शीघ्र फलदायी बन सकता है।

हर कार्य/साधना की सिद्धि के लिए अपने विशिष्ट नियम होते है। उन नियमों का अच्छी तरह से पालन करने से अवश्य ही कार्य सिद्धि होती है।

प्रतिदिन दिखाई देनेवाले सेज–बरोज से अतिपरिचित सूर्य से हमें इतनी प्रेरणा तो अवश्य ही लेनी चाहियें।

सूर्य की अपनी दूसरी विशेपता है – वह किसी भी प्रकार के भेदभाव बिना समस्त जगत को एक साथ प्रकाशित करता है।

समूचे विश्व में फैले हुए अंधकार को वह अपने अस्तित्व मात्र से ही धूमिल कर देता है।

सूर्य की अपनी विशेषता है कि वह समूचे विश्व को प्रकाशित करते हूए लेशमात्र भी प्रतिफल की इच्छा नहीं रखता है।

आप अपने घर में इलेक्ट्रिक लाईट Electric–Light का उपयोग करते हैं, परन्तु महिना बीतने के साथ ही आपके घर पर लाईट का बील (Bill) आ जाएगा किन्हीं संयोगों में १–२ मास तक बील की भरपाई न करें तो शायद है लाईट का connection–cut भी हो सकता हैं ... परन्तु जरा इस सूरज की ओर नजर करें जीवन भर हमें नियमित रूप से प्रकाश देता रहता है, फिर भी कभी भी उसकी ओर से एक भी बील नहीं आया। वह अपनी सेवाएँ नियमित रूप से और Free of Charge देता है।

सूरज की यह निष्काम परोपकार–वृत्ति हमें निष्काम भाव से परोपकार करने की प्रेरणा देती है।

हम थोड़ा–सा भी किसी के ऊपर उपकार करते हैं – हमारे मन में प्रतिफल की इच्छा जागृत हो जाती है। किसी के ऊपर उपकार करते समय हम निष्काम योग को भूल ही जाते है।

गीता में भी ठीक ही कहा है–

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेपु कदाचन'

कर्म में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं। कर्म निष्काम भाव से कर्म करते जाओ जो निष्काम भाव से करता है, उसे अपने कर्म का फल तो अवश्य मिलता ही है। आम का बीज बोया है तो समय आने पर आम का फल मिलने ही वाला है, उस फल को पाने के लिए फल की तीव्र लालसा रखनें की आवश्यकता नहीं है।

जगत् के अंधकार को हरने वाला सूरज निष्काम सेवा का प्रतीक है। आज समाज

में चारों ओर मानव सेवा, समाज सेवा आदि का नारा तो बहुत सुनाई देता है; परंतु उस नारे के भीतर केवल पोल ही होती है। सेवा के Lable के भीतर ही स्वार्थवृत्ति – शोषणवृत्ति का जाल बिछा हुआ नजर आता है।

क्या हम प्रतिदिन दिखाई देनेवाले सूरज की निष्काम वृत्ति से कुछ प्रेरणा लेंगे?

सूरज की अपनी तीसरी विशेषता हैं – उदय और अस्त दोनों अवस्थाओं में वह एकदम प्रसन्न होता है।

उतार और चढाव किसके जीवन में नहीं आता है। उदय के साथ अस्त, उत्थान के साथ पतन, विकास के साथ विनाश, जन्म के साथ मरण, निर्माण के साथ ध्वंस जुड़ा हुआ ही है। परन्तु आश्चर्य है कि मानवी अनुकूलता, सुख व सौंदर्य आदि को तो सहज स्वीकार कर लेता है, परन्तु थोड़े से प्रतिकूल संयोग आने पर तुरन्त ही आकुल व्याकुल हो जाता हैं।

छोटे–छोटे अनुकुल प्रतिकुल प्रसंगों में चंचल बननेवाले मानवी को यह सूरज सुंदर प्रेरणा करता है।

जरा, उगते हुए सूरज की ओर नजर करना, वह कितना प्रसन्न होता हैं–– उसके मुख पर कैसी लालिमा छाई हुई होती है। मध्याह्न के समय जो सूरज अपनी पूर्ण किरणों से चमकता है वही सूर्य जब अस्ताचल की ओर ढलने लगता है–– तब भी उसके चेहरे पर कैसी लालिमा दिखाई देती है। वह कितना प्रसन्न नजर आता है?

उदय और अस्त के समय समदृष्टि रखनेवाला सूरज हमें जीवन के अनुकूल और प्रतिकूल संयोगों में प्रसन्न रहने की सुंदर प्रेरणा देता है।

जीवन में समवृत्ति के कारण ही व्यक्ति सुख के अनुकूल संयोगों में एकदम उछलने लग जाता है और दुःख के प्रतिकूल–प्रसंगों में एकदम हताश और निराश बन जाता है।

सुख की भांति जीवन में दुःख का भी सहर्ष स्वीकार होना चाहिये। सुख और दुःख दोनों में मध्यस्थ रहनेवाला व्यक्ति ही जीवन के वास्तविक आनंद का लाभ उठा सकता है।

सूरज जगत् को प्रकाश तो देता ही है, इसके साथ ही अपने अस्तित्व मात्र से अनेकविध उपकार करता है।

सचमूच जीव–सृष्टि के लिए सूरज का अस्तित्व प्राणाधार स्वरूप है जगत् में यदि सूरज न हो तो जगत् का अस्तित्व ही बदल जाये। प्राणि–सृष्टि का अस्तित्व ही खतरें से भर जाय।

सूरज हमारे पाचन तंत्र को भी सहायता देता है। सूरज के अस्तित्व से ही वनस्पति–सृष्टि का विकास होता है।

वास्तव में यह सूरज तो परोपकार का ही एक पर्याय है। अपने अस्तित्व मात्र से मूक रहकर जगत् को परोपकार का संदेश देनेवाले सूरज से क्या हम कुछ प्रेरणा लेंगे?

ज्ञानकसौटी (१६)

स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे फिर इसी अंक में पृष्ठ ४६ पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। – सम्पादक)

(नोट – सभी उत्तर 'अ' अक्षर से शुरू होते हैं।)

३७६) नामकर्म की एक प्रकृति जिसके उदय से जीव अपयश प्राप्त करता है।
३७७) गुणीजनों में जो दोष नहीं है उसे भी अपनी कलुषिता के कारण प्रकट करनेवाला।
३७८) सातवीं नरक के पांच नरकवासों में से मध्यवर्ती एक नरकवास।
३७९) आत्मा का अनंत भवों का संसार बढ़ानेवाला कषाय।
३८०) आत्मा से कर्म... काल से चिपके हुये है।
३८१) राजपाट का मोह त्याग कर महावीर... पाने जंगल की ओर चल पड़े।
२८२) परमात्मा की... करने वक्त ध्यान एकाग्र होना आवश्यक है।
३८३) स्वयं की प्रशंसा एवं अन्यों की... नीच लोग करते हैं।
३८४) जिसे मोक्ष में... न हो, उसके लिये मोक्ष प्राप्त करना असंभव है।
३८५) इस चौवीशी के अठारहवें भगवान।
३८६) पावापुरी का मूल नाम।
३८७) जैनधर्म... काल से चला आ रहा है।
३८८) जैनधर्म... काल तक चलता रहेगा।
३८९) कारण, करावण और... में सरीखा फल बतलाया है।
३९०) स्वस्थ तन एवं मन के लिये सर्वप्रथम... का शुद्ध होना आवश्यक है।
३९१) राजेन्द्रसूरिजी म. सा. दुर्घटना होने से पहले ही लोगों को... कर देते थे।
३९२) साधु, श्रमण, निग्रंथ, मुनि...।
३९३) दिन के उजाले की तरह साफ है कि चांदी के वर्क की... करना हिंसायुक्त है।
३९४) बंबई के निकट के प्रसिद्ध तीर्थ जिसके मूलनायक भगवान मुनिसुव्रत स्वामीजी हैं।
३९५) नौ तत्वों में से दो तत्व।
३९६) ...नक्षत्र के बाद कैरी (आम) का उपयोग निषिद्ध माना गया है।
३९७) ...देश, उत्तम कुल एवं जैन धर्म, बिरले ही पाते हैं।
३९८) ...के जीवों को तेऊकाय के जीव कहते हैं।
३९९) पानी के जीवों को... के जीव कहते हैं।
४००) सत्य .... और धर्म का पग–पग जहाँ डेरा, वो भारत देश है मेरा।

हार्दिक श्रद्धांजली

स्व. सौ. धर्मीबाई मिश्रीमलजी रूपावत

स्वर्गवास ५/३/१९९२ फाल्गुन सुद १

हम हैं आपके

पुत्र - मोहनलाल, रमेशकुमार, चंदनमल
पौत्र - विकेश, निलेश, मधूर, सूरज एवं पप्पू
पुत्री - पंकुबाई, गुणवंती, लिला
पौत्री - अरुणा, दीना एवं समस्त रूपावत परिवार
प्रतिष्ठान - (१) **मोहनलाल रमेशकुमार रुपावत**
मु. पो. **जोगापुरा**
व्हाया - पोसालिया,
जि. सिरोही (राजस्थान)
(२) **श्री राजेन्द्र ज्वेलर्स**
जुम्मा मस्जिद शॉपिंग सेन्टर
बाजारपेठ, **कुळगांव**, स्टे. बदलापुर
जि. ठाणा (महाराष्ट्र)

मर्ज से ज्यादा हानिकारक होती दवाएं

– मुकेश कुमार –

दवा उद्योग पर हावी राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय स्वार्थ, दवाइयों के गुणवत्ता नियंत्रण की नाकाफी व्यवस्था और समूचे चिकित्सा तंत्र में घुसी मुनाफाखोरी आज अत्यंत चिंताजनक स्तर तक बढ़ गई है। नौबत यहां तक आ पहुंची है कि स्वयं डॉक्टरों को नहीं पता होता कि जो दवा वे अपने मरीज को दे रहे हैं – उससे वह स्वस्थ होंगा या नहीं, न ही उसके 'साइड इफेक्टस' के बारे में डॉक्टर कुछ जानते हैं। बाजार में घटिया, मिलावटी, गैर जरूरी और हानिकारक दवाओं की बाढ़–सी आई हुई हैं। अनेक दवाएं प्रतिबंधित होने के बावजूद सरे आम बिक रही हैं। अनेक मामलों में तो मरीजों के लिए मर्ज से ज्यादा दवाएं ही हानिकारक साबित हो रही है और समूचा चिकित्सा तंत्र इस स्थिति पर मूकदर्शक बना बैठा है।

देश में इस वक्त लगभग बीस हजार दवा बनानेवाली इकाइयां है और लगभग दो लाख दवा बेचनेवाली इकाइयां। नियमतः हर २५ दवा निर्माताओं और विक्रय इकाई पर एक–एक दवा नियंत्रण निरीक्षक होना अनिवार्य है। इस हिसाब से २६८९ दवा नियंत्रण निरीक्षक होने चाहिए लेकिन है सिर्फ ६६४। कुल मिलाकर दवा उद्योग में गुणवत्ता नियंत्रण का काम रामभरोसे चल रहा है और इस स्थिति के चलते ही आए दिन सरकारी–गैर सरकारी अस्पतालों में नकली या मिलावटी दवाओं के कारण मरीजों के मौत के मुंह में जाने के मामले प्रकाश में आते रहते हैं।

नौबत यहां तक आ पहुंची है कि देश के दूर–दराज शहरों–कस्बों की कौन कहे, राजधानी दिल्ली में ही लगभग तीन दर्जन प्रतिबंधित दवाएं बाजार में सरे आम बिक रही हैं। यहां के सरकारी अस्पतालों तक में घटिया और मिलावटी दवाइयों की सप्लाई होती है। इन दवाओं से मरीजों के मारे जाने के बावजूद इस दुष्चक्र पर कहीं रोक लगती नजर नहीं आती। कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई) की १९९०–९१ की एक ऑडिट रिपोर्ट इस चिंताजनक हकीकत की कलई कई कोणों से खोलती है। ई.एस.आई के नियमों के अनुसार उसके सभी अस्पतालों और औषधालयों में सप्लाई की जानेवाली दस प्रतिशत दवाइयों का प्रयोगशाला में परिक्षण किया जाना चाहिए ताकि उनके घटिया अथवा मिलावटी होने पर मरीजों तक वे न पहुंच पाएं। लेकिन ऑडिट दल ने अपनी जांच में पाया कि निगम के बसईदारापुर अस्पताल में १२ दवाइयां उनके परिक्षण के परिणाम आने से पहले ही जारी कर दी गई। इसमें से एक दवाई तो इस बीच सौ फीसदी इस्तेमाल की जा चुकी थी। बाकी दवाइयों में से चार दवाइयां २६ से १६ फीसदी तक इस्तेमाल की जा चुकी थीं।

ऑडिट टीम की रिपोर्ट के मुताबिक अस्पताल के आपातकालीन कक्ष में इस्तेमाल होने वाले डेक्सट्रोस इंजेक्शन की बोतलों के एक बैच के नमूने ५ नवंबर १९९० को प्रयोगशाला भेजे गए। वहां से रिपोर्ट आने में दो हफ्ते लगे और इस दौरान २००० बोतलों में से १८५९ बोतलें मरीजों को चढ़ा दी गई थीं। यह सब इस तथ्य से वाकिफ होने के बावजूद किया गया कि घटिया डेक्सट्रोस से मरिज की जान भी जा सकती है। इसके अलावा इसी अस्पताल में १९९० में दस हजार डाइजाइन गोलियां सप्लाई की गई जिन्हें १६ अप्रैल १९९० को परिक्षण के लिए भेजा गया। लेकिन परीक्षण–रिपोर्ट दो महिने बाद १५ जून १९९० को आई और उसमें दवाई का स्तर घटिया पाया गया। लेकिन इस दौरान सभी

दस हजार गोलियां मरीजों के इस्तेमाल के लिए दी जा चुकी थीं।

एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि अपने देश में लगभग डेढ़ लाख अलग–अलग ब्रांडों की दवाओं का ७० प्रतिशत अंश बिलकुल बेकार होता है और ४० प्रतिशत नुकसानदेह। मगर फिर भी ये दवाएं बाजारों में भरी पड़ी हैं और डॉक्टर उन्हें मरीजों को दे रहे हैं। कुछ समय पूर्व अनेक स्वयं सेवी संस्थाओं की शिकायत पर औषधि नियंत्रक ने जांच करने के बाद ३४ औषधि मिश्रणों की बिक्री पर रोक लगाई थी। इनमें सभी स्टीरायड मिश्रण और क्लेरामफेनिकल व स्ट्रेप्टोमाइसिन थे। स्ट्रेप्टोमाइसिन का इस्तेमाल तपेदिक और क्लेरामफेनिकल का उपयोग टाइफाइड में किया जाता रहा हैं। मगर स्वास्थ्य विशेषज्ञों का निष्कर्ष है कि ये दोनों दवाएं महज एंटीबायोटिक है जो हैजे की रोकथाम में फायदेमंद नहीं हैं। हैजे का कारण एक वायरस होता है जो शरीर में पानी की कमी पूरी होने पर अपने आप खत्म हो जाता है। उपर्युक्त दवाइयों के इस्तेमाल से हैजे का बढ़ना तो बंद हो जाता है मगर शरीर की रोग–प्रतिरोधक क्षमता खत्म हो जाती है जो हैजे से भी ज्यादा खतरनाक है। इन दवाइयों को मिश्रण रूप में बेचे जाने के कारण स्ट्रेप्टोमाइसिन पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पा रहा है जिससे करीब दस करोड़ तपेदिक के मरीज परेशान हैं।

इसी तरह एमिडोपायरिस, एस्ट्रोजन, प्रोजेस्टिरोन, विटामिन–सी, टेट्रासाइक्लिन व फेनासेटिन आदि भी प्रतिबंधित होने के बावजूद बाजार में खप रही हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि गर्भावस्था में एस्ट्रोजन–प्रोजेस्टिरोन अधिक मात्रा में लेने से बच्चों में जन्मजात विकृतियां आ जाती हैं। इस पर १९८२ में रोक लगाई गई थी लेकिन इसका प्रयोग आज भी जारी है। यही हाल दर्दनाशक दवाओं का है। बेरालगन, कोडोल्सिक, आक्सलजिन, एंड्रेक्स, वालाजेसिक, प्रोमलाजिन आदि दवाएं शरीर के लिए अनेक मामलों में बहुत नुकसानदेह साबित हो सकती हैं लेकिन फिर भी बिक रही हैं। स्टीरायड मिश्रण बेटेक्लर, बेट्नेटन, कोर्टिना, हिष्टाकोर्ट का लंबे समय तक इस्तेमाल शरीर के विभिन्न भागों पर घातक प्रभाव डालता है। इन घातक प्रभावों में पिट्यूटरी और एट्रीनल ग्रंथियों का कमजोर होना, ब्लड शुगर बढ़ना, हड्डियों और मांसपेशियों का कमजोर होना, रक्तचाप गिरना, तनाव व मनोविकार शामिल हैं।

नकली और मिलावटी दवाइयों की भरमार भी मरीजों की जान पर सवार है। दिल्ली में नकली दवाइयां तैयार करने का धंधा बड़े पैमाने पर हो रहा है। अनेक बार नकली दवाइयां पकड़ी भी जाती हैं लेकिन उनके दोषियों पर मामूली कार्रवाई से आगे बात नहीं बढ़ पाती। १९९० में दिल्ली में दो लाख रूपए से भी अधिक मूल्य की एंटीसेप्टिक बोरोलिन और बोरोप्लस क्रीम के नाम से बेची जा रही नकली क्रीम पकड़ी गई थी। इसी तरह ताकत की गोलियों, विटामिन कैप्सूल और एंटिबायोटिक गोलियों के घटिया होने की शिकायतें बड़े पैमाने पर की जाती रही हैं, लेकिन होता कुछ नहीं है। इस पूरे गारखधंधे में डॉक्टरों की भी मिलिभगत है। जो मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव भेंट–उपहार से उन्हें खुश करता रहता है, वे उसी की दवा मरीजों को लिखते रहते हैं।

अफसोस की बात है कि एक तरफ सरकार लोगों में स्वास्थ्य–चेतना विकसित करने के विभिन्न उपाय कर रही है, दूसरी ओर देश के स्वास्थ्य और औषधि तंत्र में जड़ें जमाती हुई विकृतियों की तरफ से आंखें मूंदे बैठी है। दवाइयों पर गुणवत्ता नियंत्रण प्रभावी बनाने और देशी दवा निर्माताओं के बहुराष्ट्रीय दवा कंपनियों के मुनाफाकमाऊ अनैतिक तरीके अपनाने पर प्रभावी रोक के बिना तो मरीजों को दवा के नाम पर दर्द ही दिया जाता रहेगा।

सरे राह चलते-चलते

✿ **विज्ञापन की दुनियाँ और भुलावा** – विज्ञापन की रंग–बिरंगी मोहक दुनिया ने हमें भुलावे में डाल दिया है। अब हम वही खाते हैं जो रंगीन विज्ञापनों के माध्यम से व्यापारी हमें खिलाना चाहते हैं। वही पहनते हैं जो विज्ञापन हमें बताते हैं और सौन्दर्य–प्रसाधनों आदि की वही सामग्री हम उपयोग में लाते हैं जो सिने तारिकाओं के मोहक चित्रों के साथ टेलीविजन के पर्दों पर या अखबार के पृष्ठों पर हम देखते हैं। सामग्री की शुद्धता, अशुद्धता, स्वास्थ्य पर पड़नेवाले उसके प्रभाव और उसकी निर्माण प्रक्रिया में होने वाली हिंसा को देखने–जानने की न हमें फुरसत हैं और न ही अब हम उसकी आवश्यकता समझते हैं।

✿ **उल्टी गंगा बह रही है** – वैज्ञानिकों द्वारा मांस, अण्डा, शराब और धूम्रपान से होनेवाली बिमारियों एवं अन्य समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करने से अमेरिका, यूरोप आदि देशों में शाकाहार अपनाया जाने लगा है। वहाँ धूम्रपान और मद्यपान पर प्रतिबंध लगाये जाने लगे परन्तु पवित्र गंगा वाले हमारे देश मे उल्टी गंगा बह रही है यहाँ सरकार के सहयोग से इन चीजों का प्रचार बढ़ रहा है। सरकार लोगों को शाकाहारी से मांसाहारी बनाने पर तुली हुयी है।

✿ **विश्व स्वास्थ्य संगठन चिंतित** – विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कई वर्ष पूर्व यह घोषणा की थी कि 'सन् २००० तक सबके लिये स्वास्थ्य' परन्तु अब उसके अधिकारी चिंतित है कि सन् २००० तक वे सबके लिए दवाइयाँ भले ही उपलब्ध कर दें पर हानिकारक भोजन, धूम्रपान और पर्यावरण – प्रदूषण के रहते वे सबके लिए अच्छा स्वास्थ्य कैसे दे सकेंगे।

✿ **मनोरंजन के नाम पर** – आज मनोरंजन के नाम पर फिल्मों सें हिंसा, नशा, अश्लीलता, बलात्कार, अनैतिकता एवं अराजकता को दिखाया जा रहा है। अधकचरी भौंडी सभ्यता एवं तथाकथित आधुनिकता, जो फिल्मों में देखने को मिल रहे है, वह ऐसा धीमा जहर है, जिससे भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं भावी पीढ़ी तिल–तिलकर मरती जा रही है। फिल्मों ने समाज के बुनियादी ढांचे को भी चिन्दा–चिन्दा कर दिया है।

✿ **चॉकलेट के जरिये जहर** – पर्यावरणीय अनुसंधान प्रयोगशाला लखनऊ के वैज्ञानिक डा. एस. सी. सक्सेना ने कैडबरीज, नेस्ले, अमूल, कैम्पको आदि चॉकलेटों के नमूनों का रासायनिक परीक्षण कर यह निष्कर्ष पाया है कि इन चॉकलेटों के माध्यम से अत्याधिक मात्रा मे निकिल शरीर में पहुंच रहा हैं। एक चॉकलेट खाने से ६०० से १३८० माइक्रोग्राम निकिल शरीर में पहुंचता है, जब कि अधिकतम सुरक्षा सीमा मात्र चार माइक्रोग्राम मानी जाती हैं।

❀ **एल्युमिनीयम से दूर रहें** – अमेरिका की फिलेडोल्फिया युनिवर्सिटी के वैज्ञानिक डा. सर्जडकोल तथा ए. जी. अलफ ने सिद्ध किया है कि एल्युमिनियम शरीर के लिये हानिकारक धातु है। कोई गर्म वस्तु तो इसमें रखनी ही नहीं चाहिये।

❀ **रासायनिक खाद और दिल की बिमारियॉ** – हार्ट केअर फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. (कर्नल) के. एल. चौपड़ा के अनुसार रासायनिक खादों के अंधाधुंध इस्तेमाल से दिल की बीमारियॉ बढ़ रही हैं। इनके उपयोग से उपजे अनाजों से मैग्नीशियम तत्व नहीं मिल पा रहा है। शरीर में मैग्नीशियम की कमी रक्त के जमने और दिल के दौरे को जन्म देती है।

❀ **५० वर्ष पहले** – पिछले पचास वर्षों में चीजों के कितने भाव बढे? यह जानना आश्चर्यकारक होगा? सन् १९४२ में सोना ३२ रू. प्रति तोला, शुद्ध घी ४४ पैसे प्रति किलो; चांदी ४३ पैसे प्रति किलो; चावल १२ पैसे प्रति किलो; गेहूँ ७ पैसे प्रति किलो, दुध ८ पैसे प्रतिलिटर था।

❀ **अेपेन्डिक्स जरूरी अंग** – ब्रिटीश जनरल ऑफ सर्जरी के अनुसार अेपेन्डिक्स भी एक जरूरी अंग है, उसमें दर्द होने पर जहॉ तक हो सके दवाई द्वारा दूर करने का उपाय करें लेकिन ऑपरेशन न करवायें। आयुर्वेदाचार्य तो पहले से ही यह बात कहते आये हैं किन्तु जब तक वैज्ञानिकों का समर्थन प्राप्त नहीं होता, हम मानने के लिए जल्दी तैयार नहीं होते। एपेन्डिक्स के ऑपरेशन के बाद आंतो में कैंसर होने की संभावना बढ़ सकती है।

❀ **कानून का जाल** – सन् १८५७ से १९४७ तक ब्रिटीश शासन के समय ९० वर्ष में सिर्फ ४०० कानून बनाये गये थे, लेकिन आजादी के बाद सन् १९४७ से ९१ तक ५००० कानून बनने के बाद, आज देश की परिस्थिती क्या है, वह किसी से छिपी नहीं हैं। जब तक उंचे पदों पर बैठे अधिकारियों में नैतिकता नहीं आयेगी, तब तक कितने ही कानून बन जाय, कोई सुधार होनेवाला नहीं।

❀ **राष्ट्रीयकृत बैंक और भ्रष्टाचार** – देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारियों ने एक शेअर दलाल को बैंक की कार्यप्रणाली की धज्जियॉ उड़ाकर ६०० करोड़ रूपये की धनराशि मुहैया करा दी। बिना प्रतिभूति के शेअर दलाल को सट्टेबाजी के लिये ६०० करोड़ रुपए की एकमुश्त राशि उपलब्ध कराना अधिकारों का सरासर दुरुपयोग और बैंको में व्याप्त भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा उदाहरण है।

— *मुसाफिर*.

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट

३०१/– आहोर निवासी शा. हीराचंदजी (फर्म– प्रकाशचन्द हिराचन्दजी कल्याण) की धर्मपत्नी श्रीमती मोहनीबाई के वरसीतप पारणा निमित्त...।

प्रतिमा स्वरुप

मुनिराज श्री प्रशान्तरत्नविजयजी

जैन शासन साधना प्रधान अनादिकाल से रहा हैं। साधना साधकों की विभिन्न कक्षाओं से अनेक विध मानी गयी हैं। यह एक निस्सन्देह हकीकत है कि साधक की साधना का लक्ष्य साध्य की सिद्धी में ही रहता हैं। साध्य की सिद्धि के लिए साधक को पूर्ण जागृति से साधना में जुट जाना परमावश्यक हैं।

आजकाल हम देख रहें है कि साधना ज्यादातर सफल नहीं हो पा रही हैं। कारण क्या हैं इसके पिछे? समाधान सहज हैं साधक जब जब भी साधना करने बैठता हैं, तब तब साधना एवं साध्य का भेद भूल जाता हैं। साधना को ही साध्य, ध्यान को ही ध्येय, आराधना को ही आराध्य, उपासना को ही उपास्य, उपमा को ही उपमेय समझ लेता हैं। इसी से उस साधक की साधना सिर्फ साधना तक ही सीमित रह जाती हैं, साध्य को सिद्ध नहीं कर पाती। साध्य को सिद्ध करना हैं तब तो लक्ष साध्य का ही रहना चाहिये, साधना तो लक्ष्य प्राप्ती में सहायक हैं, साध्य की सिद्धि से साधना छुट जानेवाली हैं।

जहाँ तक साध्य सिद्ध न हों वहाँ तक क्या करना? उसका प्रत्युत्तर गणधर भगवन्तोंने ''श्रमण सूत्र'' में एक्कारसहिं उवासग पडिमाहिं पद द्वारा बताया हैं।

इसी का तात्पर्यार्थ चर्चा चक्रवर्ती प्रभु श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी के पद प्रभावक पू. आ. दे. श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरिजी म. ने एकादशीतिथि की स्तुति में इस प्रकार बताया हैं –

''अग्यारे पडिमा श्राद्ध नीए, अंग अग्यारे चंग तो,
अनुमोदे सुणि आदरे ए, भांगी सर्व विभंग तो,
भेद अग्यारमो ते वरेए, छुटे भव दव ताप तो . . .''

निष्कर्ष यह हैं कि ग्यारह प्रतिमा जो श्रावक सुनकर अच्छी तरह से समझकर धारण कर्ता हैं वह श्रावक एकेन्द्रिय – द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय ये पांच पर्याप्ता एवं अपर्याप्ता मिलकर जीव के दश भेद हुए इनको पारकर ग्यारहवॉ नोइन्द्रिय नाम का जीवभेद यानि मोक्षरुपस्थान को प्राप्त करता हैं।

वे श्रावक की ग्यारह प्रतिमा –

१. दर्शन प्रतिमा २. व्रत प्रतिमा ३. सामायिक प्रतिमा ४. पौषध प्रतिमा ५. प्रतिभा प्रतिमा ६. ब्रह्मचर्य प्रतिमा ७. सचित्त त्याग प्रतिभा ८. आरंभवर्जन प्रतिमा ९. प्रेषण वर्जक प्रतिमा १०. उद्दिष्ट वर्जक प्रतिमा ११. श्रमणभूत प्रतिमा।

१. **दर्शन प्रतिमा** – यह प्रतिमा १ मास की समयावधि वाली हैं, दर्शन यानि सम्यग् दर्शन –

''या देवे देवता बुद्धिर्गुरौच गुरुतामतिः।
धर्मेच धर्मधीः शुद्धाः सम्यक्त्वमिदमुच्यते।।''

जो बुद्धि देव में देवत्व, गुरुमें गुरुत्व एवं धर्म में धर्मत्व ग्रहण करती हैं वही सम्यक्त्ववती हैं।

राग–रांवेग–निर्वेद–आस्तिक्य एवं अनुकम्पा इन पाँच गुणों से युक्त, शंका–आकांक्षा–विचिकित्सा–मिथ्यादृष्टि प्रसंशा–मिथ्यादृष्टि परिचय इन अतिचारों व शल्य से रहित ऐसे निर्दोष सम्यक्त्व का स्वीकार करना।

२. **व्रत प्रतिमा** – इस प्रतिमा में पूर्वोक्त दर्शन प्रतिमा का पालन तो हैं ही, यह दो मासावधि वाली हैं। इस में अणुव्रत – ५, गुणव्रत – ३, एवं शिक्षाव्रत – ४ कुल मिलाकर बारह व्रतों को निरतिचार एवं अपवादरहित धारण करना चाहिये।

३. **सामायिक प्रतिमा** – पूर्वोक्त दोनों प्रतिमा का पालन हैं ही। यह तीन मास तक वहन की जाती हैं। सामायिक का स्वरूप प्रवृत्ति एवं निवृत्ति रुप हैं। सावध पाप कारी योगों के वर्जन रुप निवृत्ति एवं निरवध निर्दोष योगों के सेवन में प्रवृत्ति। सामायिक के फल के सम्बन्ध में कहा गया हैं कि –

''दिवसे दिवसे लखे, देह सुवण्णस्सखंडियं एगो।
एगो पुण सामाइयं, करेइन पहुप्पह तस्स।''

एक मनुष्य प्रतिदिन लाख सोनैयें का दान करे एवं एक मनुष्य सामायिक करे, उस में दान दाता व्यक्ति सामायिक कर्ता के समान फल को पाने में समर्थ नहीं हो सकता, अर्थात् सामायिक का फल महत्तम हैं। इसलिए श्रावकों को सामायिक प्रतिमा वहन करनी चाहिये।

सामायिक की विधि ''आवश्यक बृहद्वृत्ति'' में इस तरह बताई हैं, ''त्रिविध साधुओं को नमस्कार करके सामायिक करे, हे भगवन्! मैं सामायिक करता हूँ, जहाँ तक साधुओं की पर्युपासना करूं वहाँ तक मुझे करण करावण रूप द्विविध से मनोवाक्कायारूप त्रियोग से पच्चक्खाण हैं।'' ऐसा कहकर इरियावहिया का प्रतिक्रमण करे। इस विधि ही का समर्थन पञ्चाशक वृत्ति, नवपद विवरण, यशोदेवसूरिजीकृत श्री पञ्चाशक चूर्णि, उपा. जयसोम रचित स्वोपज्ञ इर्यापथिका षट्त्रिंशिका विवरण इत्यादि ग्रन्थों में मिलता हैं।

४. **पौषध प्रतिमा** – पूर्वोक्त तीन प्रतिमा का पालन इस में भी करना हैं, यह प्रतिमा चारमास तक की हैं।

आठम, चौदस, पुर्णिमा, अमावस्यादि पर्वतिथियों में पौषध ग्रहण करना चाहिये। पौषध भी चार प्रकार के हैं – १. शरीर सत्कार के त्याग रुप पौषध, २. अब्रह्मचर्य के त्याग रुप पौषध, ३. व्यापार परिवर्जन रुप पौषध, ४. आहार त्यागरुप पौषध चारों ही प्रकार के पौषध का पालन कोई भी प्रकार की न्यूनता रहित, जैसा आगमों में कहा हैं, वैसा सम्यग् विधि पूर्वक करना चाहिये।

पौषध के विषय में एक मतान्तर भी प्रवर्तमान हैं – जैसे कि कोई कोई सुविहित

आचार्य कहतें है कि पौषध सिर्फ पर्वदिनों में ही आराध्य हैं, इसकी आराधना नित्य नहीं करनी चाहिये एवं कोई कोई आचार्य ऐसा भी कहतें है पर्वदिन का कर्तव्य तो हैं ही किन्तु प्रतिदिन भी कर सकतें हैं सत्य तथ्य ज्ञानी गम्य।

५. **प्रतिभा प्रतिमा** – पूर्व में कहीं गयी चार प्रतिमा का पालन इसमें भी करना हैं, यह ५ मास तक वहन की जाती हैं। प्रतिमाप्रतिमा में दो शब्द हैं – १. प्रतिमा एवं २. अप्रतिमा।

इस प्रतिमा को वहन करनेवाला स्थिर एवं सत्वसे अचल होना आवश्यक हैं। क्योंकि अस्थिर मनुष्य प्रतिमा का विराधक बनता हैं। इस प्रतिमा में रात्रि में चौटे में जाकर कायोत्सर्ग किये जाते हैं, उसमें उपसर्ग भी आने की पुर्ण सम्भावना हैं, इसमें कोई एक रात्रि प्रमाण तो कोई सर्वरात्रि कायोत्सर्ग में रहा करते हैं।

प्रतिमा यानि जब कायोत्सर्ग में लीन हो आराधक तब जिनेश्वर परमात्मा का निरंतर ध्यान करें, एवं परमात्मा दर्शन रहित जीव का चिंतन–मनन करे।

अप्रतिमा के समय में भी स्नान न करें, प्रकट प्रकाशमें दिन में ही अशनादिका भोजन करे, धोती न पहने, दिन में ब्रह्मचर्य का पालन करे, रात्रि के विषय में अगर प्रतिमा वहन यानि कायोत्सर्ग न किया हो तो स्त्री एवं भोग का परिमाण करे रात्रि भोजन का अवश्य त्याग करे।

६. **ब्रह्मचर्य प्रतिमा** – इस की वहनावधि ६ मास की हैं। पूर्वोक्त ५ प्रतिमा का पालन इस में भी हैं।

ब्रह्मचर्य के विषय में संबोध सप्ततिका ग्रन्थकार कहतें हैं – "मैथुन संज्ञा में आरूढ, प्राणी नौलाख सूक्ष्म जीवों का नाश करता हैं, यह तीर्थंकर भगवंतने बताया हैं।

पूर्वोक्त प्रतिमाओं में दिन में ही ब्रह्मचर्यपालन की बात थी, इस प्रतिमा से दिन एवं रात्रि के विषय में सर्वथा मैथुन का प्रतिषेध किया जाता हैं। इसलिए ही इस में चित्त विप्लव करनेवाली श्रृंगारकथा, कामकथा, स्त्रीकथा, भोजनकथा, देशकथा, राजकथा का भी निषेध प्रतिपादन किया गया हैं, इस प्रतिमा के वाहक को स्नान, विलेपन, धूपन विभूषा के उत्कर्ष को त्याग करना।

७. **सचित्त त्याग प्रतिमा** – सचित्ताहारवर्जन नाम की यह सौंतवीं प्रतिमा सात महिने तक वहन की जाती हैं। इस में भी पूर्वोक्त छः प्रतिमाओं का पालन करना हैं।

इस प्रतिमा में सचित अशन–पान–खादिम–स्वादिम का त्याग किया जाता हैं।

८. **आरम्भवर्जन प्रतिमा** – स्वयं ही आरंभ का त्याग करे ऐसा इस प्रतिमा का विधान हैं। आठमास तक यह प्रतिमा वहन कि जाती हैं। पूर्वोक्त ७ प्रतिमा की सबविधिभी पालन करनी हैं। पृथ्वी का उपमर्दनादि कार्य स्वयं करे नहीं, किन्तु आजिवीकादि के लिए आरंभ आवश्यक होवे तो तीव्र परिणाम रहित उपासक अन्यकार्यकर द्वारा सावध

व्यापार रुप आरंभ करवा सकता हैं।

९. **प्रेषणवर्जक प्रतिमा** – इसका नौमास का काल सिमित हैं। पूर्वोक्त सब प्रतिमा का पालन इस में अन्तर्गत ही समझना। आठवीं प्रतिमा में जो आरंभ अन्यकार्यकर द्वारा कराने की छुट थी, उसका यह प्रतिमा निषेध करती है।

१०. **उद्दिष्टवर्जक प्रतिमा** – अपने उद्देश से पकाया हुआ भोजन प्रतिमाधारी उपासक न करे। गृह विषयक सर्वकृत्यों के त्यागरुप यह प्रतिमा दशमास तक वहन की जाती हैं। पूर्वदर्शित नौ प्रतिमा का पालन तो इसमें भी करना हैं।

११. **श्रमणभूत प्रतिमा** – मुंडन या लोच कराके रजोहरण एवं पात्र के उपलक्षण से साधुके सर्व उपकरण को ग्रहण कर, साधु सम होने से घर से विहार करे, समाचारी के आचार का पालन करे, समितिगुप्तिका सुरुप पालन करे, भिक्षार्थे गृहस्थों के घरों में जाय, ''प्रतिमा प्रतिपन्न श्रमणोपासक की भीक्षा दीजिये।'' ऐसा कहें एवं मासकल्प आदि सब आचारों का पालन करें।

इस प्रतिमा का वाह्यकाल ११ मास तक का हैं। बाकी जघन्य से तो सब प्रतिमा अन्तर्मुहूर्तादि के काल प्रमाणवाली ही हैं।

इसमें भी पूर्वोक्त दश प्रतिमा का पालन आवश्यक रुप से कहा गया हैं।

ग्यारह प्रतिमा वहन करने के बाद जन कोई श्रमणोपाशक पुनः घर लौटना चाहे तो पात्र–रजोहरणादि सब उपकरण श्रमण भगवन्त को समर्पित कर आ सकता है।

••••• पृष्ठ ४० का शेष---------
अवधि में बच्चों को पशुओं के महत्व से सम्बन्धित ऐसे पाठ पढ़ाये जाने चाहिये जिनसे उनके मन में पशुओं के प्रति मानवीय दृष्टिकोण को बल मिले, कहानियों, नाटकों और महापुरुषों की जीवनियों पर आधारित कथाओं के माध्यम से एक कुशल अध्यापक ऐसी भावनाओं को सहज ही उत्प्रेरित कर सकता है। जो बच्चे पशुओं के प्रति अपने आचरण व व्यवहार में आशातीत रुचि दिखाते हैं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये पुरुस्कारों की व्यवस्था होनी चाहिये।

बच्चे तो स्वाभाविक तौर पर पशु पक्षियों से प्यार करते हैं। दुर्भाग्यवश उस प्यार को रचनात्मक रुप में व्यक्त करने के लिये उन्हें शिक्षित नहीं किया जाता है, और बड़े होते–होते उनके मन में जानवरों के प्रति वही भावना बैठ जाती है जो बड़ों के मन में होती है, और उनकी तरह वे भी यही सोचने लगते हैं कि सब जीव–जन्तुओं का सृजन मनुष्य के लाभ के लिये हुआ है और इसलिये उन्हें शोषित करने का अधिकार उसे प्राप्त है। मानवीय शिक्षा के माध्यम से बच्चों के मन में ऐसी अमानवीय प्रवृत्तियों के जन्म को रोका जा सकता है। मानवीय शिक्षा को यदि स्कूली शिक्षा का अभिन्न अंग स्वीकार कर लिया जाए तो युवा पीढ़ी के हृदयमय में ऐसी भावनाओं का संचार सम्भव है जिससे न केवल वे सब जीव जन्तुओं के प्रति प्यार बरतें, वरन् यह भी महसूस करें कि उनके प्रति व्यक्त किया जानेवाला प्रेम एक महान और अनोखा अनुभव है।

○ ◇ ○ ◇ ○

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (१२)

संकलनकर्ती : साध्वीजी डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी
साध्वीजी डॉ. सुदर्शनाश्रीजी

प्रस्तुत स्पर्धा १२ का उत्तर अलग से फुलस्केप पेपर पर लिखकर पूर्णनाम पता एवं शाश्वत धर्म की सदस्य संख्या के साथ कार्यालय के पते पर १० अगस्त तक पहुंचाएं। प्रस्तुत स्पर्धा के उत्तर एवं परिणाम सितम्बर ९२ में प्रकाशित किये जाऐंगे।

(नोट :– एक सदस्य संख्या पर एक ही पृविष्ठी स्वीकृत की जाएगी। सदस्य संख्या के अभाव में प्रतियोगिता में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।)

पुरस्कार सौजन्य : पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से जूना जोगापुरा (राज.) निवासी शा. चन्द्रभाणजी भीखाजी श्री श्रीमाल की धर्मपत्नी श्रीमती शांतिबाई की ओर से ५०१/– पांच सौ एक रुपये का नगद पुरस्कार उत्तीर्ण प्रतियोगियों में समान रूप से वितरित किया जाएगा। **– सम्पादक**

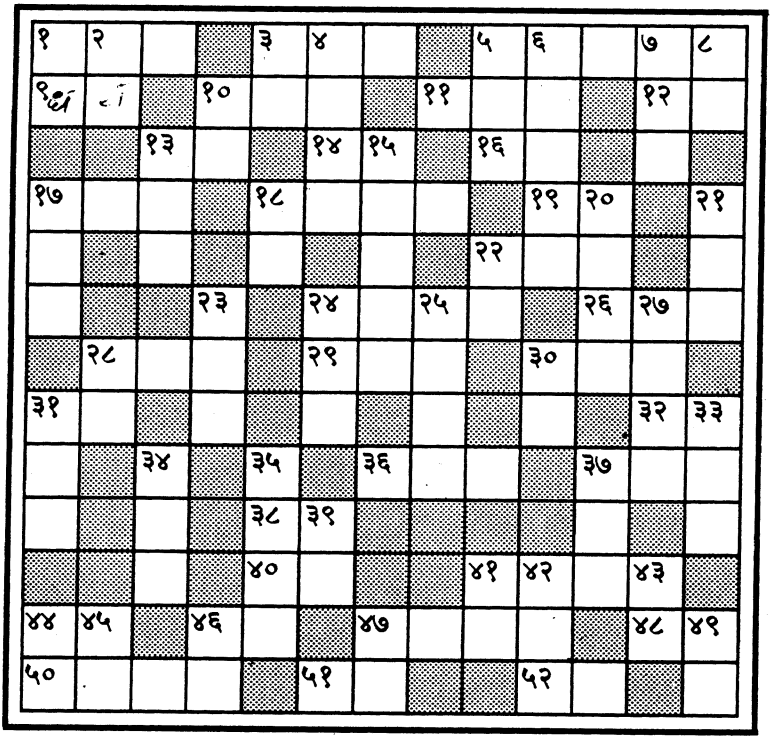

बायें से दायीं ओर :

१. ... करने से जीव अधिकांशतः तिर्यञ्च योनि पाता है। (३)
३. प्रशंसा (प्राकृत में)। (३)
५. ... सूरिजी नवाङ्गी टीकाकार थे। (५)
९. ऋषभदेवजी ने अठ्ठयानवें पुत्रों को अंग–बंग... आदि देशों का राज्य देकर दीक्षा ली। (२)
१०. साधु-साध्वी भगवन्त... जीवों के रक्षक होते हैं। (३)
११. ... नाम कर्म उदय से व्यक्ति सभी का प्रियपात्र बनता है। (३)
१२. स्कन्दाचार्य के शिष्यों ने समभाव से... परिषह सहन किया था। (२)
१३. प्रत्येक वनस्पतिकाय के भेदों में से एक। (२)
१४. प्राचीन काल में साध्वियाँ... त्रिक ग्रन्थों का अध्ययन करती थीं। (२)
१६. मेतार्य मुनि के आहारार्थ पधारने पर सोनी सोने के... घड़ रहा था। (२)
१७. रामायण का एक पात्र। (३)
१८. नवपदों में से एक पद का वर्ण। (२)
१९. शल्य... है। (२)
२२. ... के पाँच सौ साठ भेद हैं। (३)
२४. ... का सिद्धान्त 'कडे माणे कडे' का है। (४)
२६. ज्ञान–ध्यान के लिए... वातावरण होना चाहिए। (३)
२८. वीर के शासन में तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म अर्जित करनेवाली एक जीवात्मा। (३)
२९. ... करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। (३)
३०. ... पक्षी मनुष्य लोक के बाहर होते हैं। (३)
३१. चंपा के राजा सिंहरथ के... श्रीपाल थे। (२)
३२. ... जाय तो जाय पर सारव नहीं जाना चाहिए। (२)
३६. मुनिवर श्रीपाल का परिचय देकर... मार्ग से प्रस्थान कर गए। (३)
३७. उत्सर्पिणी काल के एक चक्रवर्ती। (३)
३८. मुनि को पंखे की... नहीं कल्पती है। (२)
४०. शुभभाव से सुकृत में लगाई गई राशि पुण्य खाते में... होती है। (२)
४१. अतीतकाल के चौवीश तीर्थंकरों में से एक। (४)
४४. शरीर... प्रकार के होते हैं। (२)
४६. प्रत्येक वनस्पति काय है। (२)
४७. सोलह सतियों में से एक। (४)
४८. शत (प्राकृत में)। (२)
५०. वर्धमान कुमार की दीक्षा शिबिका। (४)
५१. साधु तो विचरता भला... न लागे कोय। (२)
५२. सुमतिनाथ प्रभु का ज्ञानतरू। (२)

ऊपर से नीचे की ओर :

१. भगवान् ने बाहुबली को पुरूष की बहत्तर... सिखाई। (२)
२. अधिकांशतः मंदिरों में शत्रुंजय, गिरनारजी आदि के... होते हैं।
३. परमात्मा के समक्ष... हुआ फल ही चढ़ाना चाहिए। (२)
४. श्रमण जीवन बड़ा... होता है। (४)
५. अरिहंत परमात्मा का एक विशेषण... दयाणं है। (३)
६. गौतम द्वारा पूछे गए छत्तीस हजार प्रश्न... सूत्र में हैं। (५)

७. कंस ने... के छह पुत्रों को मारा था। (३)
८. काल सौकरिक प्रतिदिन पाँच सौ पाड़ाओं का... करता था। (२)
१०. कुमारपाल राजा अपने पशुओं को... हुआ जल पिलाते थे। (२)
१३. ...कठोल द्रव्य है। अतः इसके साथ कच्चा दूध–दही व कच्ची छाछ नहीं खाया जाता है। (३)
१५. देव, नारकी व एकेन्द्रियजीव... नहीं करते हैं। (५)
१७. वर्तमान के तीर्थंकरों में से एक तीर्थंकर के पिता। (३)
१८. सोलह जिन का वर्ण... है। (२)
२०. साधु–सन्तों का हृदय... के समान कोमल होता है। (४)
२१. ... भव मुक्ति का मंगल द्वार है। (३)
२२. ... नाथ प्रभु के तेरह गणधर थे। (२)
२३. प्रियदर्शना नंदिवर्धन की... थी। (३)
२४. बारह राशियों में से एक। (३)
२५. ... परमात्मा अठ्ठारह दूषण से रहित होते हैं। (४)
२७. श्रीमद् राजेन्द्रसूरि गुरूदेव ने ई.सन् १८७९ में... में चातुर्मास किया था। (४)
२८. सेला नर्क में... रेत बहुत होती है। (२)
३०. अजीर्ण के समय भोजन... की तरह घातक होता है। (२)
३१. ... ने साठ हजार वर्ष तक आयम्बिल तप किया था। (३)
३३. किसी को ज्ञानार्जन में... पहुँचाने से ज्ञाना वरणीय कर्म बंधता है। (३)
३४. ... मुनि के सत्संग से श्रेणिक को सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई। (३)
३५. 'मन्हाजिणाणं' सज्झाय में वर्णित श्रावक के छत्तीस कर्तव्यों में से एक। (४)
३७. अकबर बादशाह ने श्री हीरसूरीश्वरजी को जगद्गुरू का... दिया था। (३)
३९. ... पार्श्वकुमार की माता थी। (२)
४१. सौधर्मेन्द्र वर्धमानकुमार के क्रीड़ार्थ श्री... रख गए थे। (२)
४२. शत्रुंजय महातीर्थ पर... की टूंक है। (३)
४३. नवकार महामंत्र में नव... हैं। (२)
४४. अवग्रह... है। (२)
४५. जैनदर्शनानुसार ढाई द्वीप में एक सौ बत्तीस... है। (२)
४६. पुद्गल का एक लक्षण (प्राकृत में)। (२)
४७. में से द्वेष पैदा होता है। (२)
४९. अष्टांग योग का एक अंग। (२)

मानव

जितना खाता है उससे नहीं बल्कि जितना पचाता है, उससे बलवान बनता है।
जितना कमाता है उससे नहीं बल्कि जितना बचाता है, उससे धनवान बनता है।
जितना पढ़ता है उससे नहीं बल्कि जितना याद रखता है, उससे विद्वान बनता है।
जितना उपदेश देता है उससे नहीं बल्कि जितना आचरण करता है उससे धर्मवान बनता है।

समर्पण

— श्री नैनमल सुराणा

वह अपार लावण्यवती थी। उसकी सुकोमल देह में अलौकिक आकर्षण था। उसकी वाणी वीणा के स्वरों को लज्जित करती थी। उसके नेत्र मृगी के नेत्रों से होड़ लेते थे।

वह युवती थी। उस पर जिसकी दृष्टि पड़ती, वह उसे देखता ही रहता। उसके यौवन में चन्द्रमा की शीतल ज्योति, माधुर्य एवं काव्य प्रवाहित था। वह अपार धन-राशि की स्वामिनी थी। उसके पास ऐश्वर्य और विलास की समस्त साम्रगी उपलब्ध थी। नाम था उसका वासवदत्ता।

वह उस काल की ऐतिहासिक विश्व सुन्दरी थी। उस समय उसके समान सुन्दरी दूसरी नहीं थी, पर थी वह एक वैश्या। विश्व को विमोहित करने वाला सौन्दर्य प्रदान कर विधाता ने उसे वैश्या बनाकर मानो एक कसक उत्पन्न कर दी थी।

वसन्त का प्रातःकाल था। उपगुप्त नामक एक युवा भिक्षु वासवदत्ता के द्वार पर भिक्षा प्राप्ति के लिये रुका। अचानक वासदत्ता की दृष्टि युवा भिक्षु उपगुप्त पर पड़ते ही उसके हृदय में उसके लिये प्रेम उत्पन्न हो गया।

उपगुप्त के पास धन-दौलत तो नहीं था, पर उसके पास नेत्रों का अमृत, मन की स्थिरता एवं शान्ति की निद्रा थी। मन के विकारों एवं वासनाओं पर उसने विजय प्राप्त कर ली थी। पथ-भ्रष्ट करने वाले संसार के प्रलोभनों का उसे पूर्ण ज्ञान था, अतः उसके नेत्र सदा निर्विकारी रहते। उसके मुख-मण्डल पर एक दिव्य आभा थी। संसार को अपने रुप से मुग्ध करने वाली वासवदत्ता आज उस भिक्षु के सौन्दर्य पर मुग्ध हो गई।

'योगी! पात्र निकालो, मै उसमें आपना हृदय समर्पित कर दूं। वासव ने नम्रता पूर्वक प्रणय निवेदन किया।

'तुम्हारा तात्पर्य मै नहीं समझा, देवी! उपगुप्त ने सहजता से उत्तर दिया।

वासव बोली —'महाराज, आपकी यह सुकोमल देह धूल में मिलने और भिक्षा मांगने के लिये नहीं है। इस अनुपम सौन्दर्य का सृजन वन-वन भटकने और संसार से विरक्त रहने के लिये नहीं हुआ है। आप कृपा कर मेरे केलि-भवन में पधारिये। मैं विश्व-विजयिनी आपके चरणों की दासी बनकर आपकी सेवा करनी चाहती हूँ। मैं आपको अपने हृदय सिंहासन पर बिठा कर आपकी पूजा करूंगी। कृपया इस दासी की सेवा स्वीकार कर कृतार्थ करें।'

उपगुप्त ने शान्त चित्त हो उत्तर दिया - 'अभी वह शुभ घड़ी कुछ दूर है, तनिक प्रतिक्षा करो। उपयुक्त समय आने पर मैं सहर्ष उपस्थित होऊँगा,' कहता हुआ उपगुप्त चला गया।

वासवदत्ता देखती ही रह गई। वह स्तब्ध, खिन्न थी कि एक साधारण भिक्षु उसका

तिरस्कार कर चला गया। वह विमूढ़ सी खड़ी देखती रही। उसे ध्यान तक नहीं रहा कि वह कब से यहाँ खड़ी है और कब, कहाँ चला गया। पाषाण-प्रतिमा बनी वासव बहुत देर तक वहीं अडिग निश्चल खड़ी रही।

(२)

शरद-ऋतु के निर्मल गगन में चन्द्रमा की किरणें स्वच्छ चान्दनी छिटका रही थीं। नगर में घूम कर भिक्षा प्राप्त कर उपगुप्त अपने मठ की ओर अग्रसर हो रहा था। उस समय समीप ही बहती सरिता के तट पर किसी शिकारी के बाण से आहत एक सिंह अचेत पड़ा था। उपगुप्त का हृदय उस प्राणी के लिए द्रवित हो उठा। मरणोन्मुख सिंह के सीने में भयानक घाव था उपगुप्त सरिता के जल से उसका घाव धोकर साफ करने लगा।

उसने देखा कि सरिता में एक सुन्दर नौका तैरती हुई तट की ओर जा रही है। नौका के मधुर संगीत की मादक ध्वनि प्रसारित हो रही है। शरद-ऋतु की निर्मल-धवल चान्दनी, वन प्रदेश की नैसर्गिक मनोहरता, सरिता का रमणीय वातावरण एवं संगीत कि अमृत वृष्टि कुछ भी उपगुप्त को सम्मोहित, आकर्षित नहीं कर पा रहे थे। वह उस बेसुध सिंह का घाव धोने में निमग्न था।

नौका तट पर पहुँच गयी। उपगुप्त की दृष्टि सहसा उस ओर गई और नौका में से उसने वासवदत्ता को उतरते हुए देखा। वासवदत्ता ने निकट आकर जब उपगुप्त को यह विचित्र कार्य करते देखा तो वह बोल उठी, महाराज! यह आप क्या कर रहे हैं? क्या आप नहीं जानते की चेतना में आने पर यह हिंसक पशु अपने प्राण-रक्षक एवं जीवन-दाता को ही खा जायेगा।

'जानता हूं, पर मनुष्य के भावुक हृदय को जला कर राख करने वाले रूप और सौन्दर्य से यह सिंह अधिक भयानक नहीं है।'

उपगुप्त के शब्दों की ओर ध्यान दिये बिना ही प्रेमातुर वासवदत्ता ने कहा, 'महाराज! मैं भी आहत हूं। उस घायल सिंह को जीवन-दान देने से पूर्व आप मुझे जीवन-दान दीजिये।'

'देवी! अभी वह समय, वह घड़ी नहीं आई, आने पर मैं स्वयं उपस्थित हो जाऊँगा', उपगुप्त ने शुद्ध भाव से कहा।

घोर अन्धेरी रात्रि का प्रथम प्रहर। वासवदत्ता के हृदय में धन की प्रबल लालसा जाग्रत हुई। उसका धनवान प्रेमी मदिरा के नशे में अचेत पड़ा था। वासव ने कटार उठाई। उसने मदिरा के नशे में अचेत पड़े अपने प्रेमी की ओर देखा, एकाएक उसके हाथ में से कटार गिर गई। अपने सामने टंगे दर्पण में वासव ने अपना मुख देखा, लोभ की उद्दाम लालसा उसको अपने सीने में दहकती दिखाई दी और उसने तत्क्षण अपनी कटार प्रेमी के सीने के पार कर दी। वासव ने धन के लोभ में अपने प्रेमी की हत्या कर दी।

वासव पकड़ी गई, उसका अपराध अक्षम्य था। न्यायधिकारी ने उसे फांसी की सजा देने के बदले उसके कान-नाक कटवा दिये, सम्पूर्ण विश्व को ललकारने वाले उसके मृग-नैन निकलवा दिये और कमल-नाल के समान उसके सुकोमल हाथ भी कटवा कर फैंक दिये।

रूपवती वासवदत्ता विभत्स हो गई। जन-जन को लुभाने वाला उसका रूप-लावण्य सदा-सदा के लिये विलीन हो गया। जो लोग उसका सहवास पाने के लिये तरसते थे, उनको उसे देखने से भी घृणा हो गई। उसके विनाश के समाचार उपगुप्त के कानों में भी पहुंचे। समाचार सुन कर वह चुपचाप अपने मठ से वासवदत्ता के पास पहुंचा।

वासव ने प्रश्न किया—"कौन?"

'मैं उपगुप्त हूं, आज उपयुक्त समय है, में आ गया हूं, उत्तर मिला ।

दीर्घ निःश्वास खींचती हुई वासव बोली, अब आने की क्या आवश्यकता थी? जब मेरी देह-लता वासंती सौरभ से सुवासित थी, मेरे रूप का चांद अमृत वृष्टि कर रहा था, तब आप क्यों नहीं आये? मैंने आपकी कितनी प्रतिक्षा की? आपके लिये मैं कितनी बेचैन हुई? पर आप नहीं आये। अब बहुत विलम्ब से आये हैं।'

'नहीं वासव?' उपगुप्त ने कहा—'तेरे निकट आने का मेरे लिये यही उपयुक्त समय है। जब तेरे सौन्दर्य, सुख और वैभव की पराकाष्ठा का समय था, तब तुझे मेरी आवश्यकता नहीं थी, पर आज तेरा लावण्य विनष्ट हो चुका है, तेरे चाहने वाले पतंगे सब तुझ से दूर जा चुके हैं, हर कोई तुझे त्याग चुका है, तब.....।

उपगुप्त तनिक रुका। पुनः बोला—'बहिन! शारीरिक रूप से आत्मिक रूप का बोध प्राप्त न किया जा सके तो फिर पतन के अतिरिक्त क्या परिणाम होगा? तुमने अपने सौन्दर्य की ज्योति से अपनी आत्मा को ज्योतिर्मय बनाने के बदले उसे भस्म कर डाला। तू विश्व-सुन्दरी न होकर वास्तव में विष-सुन्दरी, विषय-वासना की भट्टी बन गई थी। काम, लोभ आदि विषयों ने ही तेरा सर्वनाश किया है, कर्म की विडम्बना! बहन वासवदत्ता! उठो, जागो, अपने को देखो। सत्य कहा जाय तो मेरे लिये तेरे पास आने का समय आज ही हुआ है। अब मैं तुझे छोड़कर अन्य कहीं नहीं जाऊंगा। मैं तेरी भरपूर सेवा करूंगा, तुझे सहारा दूंगा।'

वासवदत्ता की सात्विक वृत्तिया जागृत हो गईं। उसने उठ कर उपगुप्त के चरणों में शीश झुकाया और उपगुप्त ने अपना वरद हस्त उसके सिर पर रखा। एक ध्वनि आई—

'बुद्धं शरणं गच्छामि।'

रुकिये ! पढ़िये !! सोचिये !!!

☛ राष्ट्र केवल पहाड़ों, नदियों, खेतों, भवनों और कारखानों से नहीं बनता, यह बनता है उसमें रहनेवाले लोगों के उच्च चारित्र से। हम केवल राष्ट्रीयता के खाने (कॉलम) में भारतीय लिखने तक ही न जीयें, बल्कि एक महान् राष्ट्रीयता (सुपर नेशनलिटी) यानि चारित्रयुक्त राष्ट्रीयता के प्रतीक बनकर जीयें।

☛ दुनियॉ में सिगरेट के विज्ञापनों पर ही होनेवाला खर्च विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्वास्थ्य बजट से भी ज्यादा है।

☛ आई. पी. सी. सी. रिपोर्ट के अनुसार हमारी करतूतों के कारण हर साल वातावरण में ३८० करोड़ टन कार्बन डाइ–आक्साइड घुलती है।

☛ एक सामाजिक संस्था द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार बम्बई के जुनियर कॉलेजों के छात्रों में नशेड़ियों का औसत प्रतिशत २० से ३५ के बीच है। डिग्री कॉलेजों में यही बढकर ५० से ७० फीसदी हो जाता है।

☛ एक अनुमान के अनुसार भारत सहित दुनियॉ के १०० से अधिक देशों में नए मरूस्थल पनप रहे हैं और पुराने मरूस्थल अपना आकार बढ़ाते जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक रपट के अनुसार तो दुनिया के शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों की ८० प्रतिशत उपजाऊ भूमि पर मरूस्थलीकरण की काली छाया मंडरा रही है।

☛ डी.डी.टी. एक ऐसा रसायन है जिसे मिट्टी के लिये ही नहीं, संपूर्ण पर्यावरण के लिए खतरे की घंटी कहा गया है। दुःखद पहलू यह है कि पश्चिमी देशों में घातक समझी जानेवाली डी.डी.टी. हमारे देश में धड़ल्ले से प्रयोग की जाती है। इन रसायनों की विषाक्तता के कारण मिट्टी में मौजूद उपयोगी जीव मर जाते हैं।

☛ एक सर्वेक्षण के अनुसार कुछ वर्षों के भीतर देश में नशा करने वालों में महिलाओं की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ी है। शायद ही अब कोई ऐसा नशीला पदार्थ बचा हो जिसका महिलाएं सेवन न करती हो।

☛ दुनियॉ में हर वर्ष लगभग ८५ अरब डालर धूम्रपान पर ही खर्च होता है।

☛ अकेले भारत में नशीले पदार्थों पर निषेध हो जाये तो उसकी क्रय शक्ति १४० करोड़ रूपये बढ जाती है।

☛ मनुष्य के शरीर में ४०० ग्राम मैग्नीशियम की मात्रा न्यूनतम आवश्यक होती है। इधर सोडियम

फास्फेट और नाइट्रोजन उर्वरकों के इस्तेमाल से शरीर में मैग्नेशियम की मात्रा कम हो गयी है। प्राकृतिक खाद के उपयोग से वह मात्रा सही प्रमाण में बनी रहती थी।

☛ वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार एक वृक्ष द्वारा उससे उत्पन्न होनेवाली ऑक्सीजन की किमत से तुलना की जाये तो लगभग २० लाख रूपये होती है।

☛ अमेरीका के नोर्थ केरोलिन युनिवर्सिटी की 'स्कूल ऑफ मेडिसीन टांबेको इंस्टीट्यूट' के अनुसार बचपन में जो बालक च्युइंगम बहुत खाते हैं, उनके बड़े होने पर सिगारेट के व्यसनी बन जाने की संभावना बढ़ जाती है।

☛ वैज्ञानिकों ने जो शीघ्र पकनेवाली बौनी फसलें विकसित की हैं, उन्हें सिंचाई की जरूरत परम्परागत बीजों के मुकाबलें दो–तीन गुनी ज्यादा होती है जिसमें भूमि के नीचे के जल का निरंतर दोहन हो रहा है। भूजल का यह दोहन पृथ्वी के नीचे के पर्यावरण में कितना असंतुलन पैदा कर रहा है, यह भी एक सोचने का विषय है।

☛ बौनी फसलों के कारण भूसे तथा चारे की कमी हो गई है, जो पशु धन को प्रभावित कर रही है। भूसा तथा चारे की इस कमी के कारण पशुओं की संख्या निरंतर कम होती जा रही है। पशुओं की कमी से भी पर्यावरण में भारी असंतुलन पैदा हो रहा है।

☛ आज विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी एजेंसियॉ पर्यावरण के बारे में सबसे ज्यादा शोर–शराबा कर रही हैं तथा पर्यावरण के नाम पर धन भी खूब खर्च किया जा रहा है। मगर उस धन का कोई अंश इस अध्ययन पर खर्च नहीं किया जा रहा कि बौनी व शीघ्र पकनेवाली फसलें तथा खरपतवार नाशक जैसी जहरीली दवाएँ पर्यावरण को कितना बिगाड़ रही हैं। इसका कारण यह है कि पर्यावरण का शोर मचानेवाली विदेशी एजेंसियॉ ही बौनी फसलों तथा खरपतवार नाशकों की जनक है अतः वे इस बारे में कुछ कहकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी क्यों मारेंगी ?

☛ एफ.ओ.ए. (फूड एन्ड एग्रीकल्चरल ऑर्गेनाइजेशन) के अनुसार कीटनाशी दवाओं के कारण आरंभ में जिन कीटों की संख्या सिर्फ ६५ थी अब बढ़कर ३६४ हो गयी है।

— प्रवासी

ज्ञान... दर्शन... चारित्र

आत्म स्वरुप को जानना सम्यग्ज्ञान है।

आत्म स्वरूप की प्रतीती होना सम्यग्दर्शन है।

आत्म स्वरूप में संयम एवं तप द्वारा स्थिरता होना सम्यग्चारित्र है।

मानवीय शिक्षा – क्यों और कैसे

– श्री पन्नालाल मुन्धड़ा

विश्व के सभी धर्मावलम्बियों तथा महापुरुषों ने पशु पक्षियों के प्रति करुणा भाव रखने का संदेश दिया है। हमारे वेद पुराण उपनिषदों एवं गीता में भी जैव्य – एकता अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि में उस एक ही ब्रह्म शक्ति का प्रकाश अर्थात् प्राण व्याप्त है का सन्देश मिलता है। भगवान महावीर ने कहा, 'सभी जीवों का अपने समान समझो, किसी को भी कष्ट न दो।' भगवान बुद्ध ने मानव जाति को अहिंसा का सन्देश देते हुये कहा, 'जिस प्रकार कोई मां अपने इकलौते बच्चे को प्यार करती है, उसी प्रकार तुम प्रत्येक जीव के साथ बर्ताव करो।'

कितने आदर्श हैं ये विचार। कितनी महान है यह फ़िलासफ़ी। परन्तु खेद है कि मनुष्य महापुरुषों द्वारा प्रतिपादित इन मूल सिद्धान्तों को त्यागकर ऐसी जीवनशैली अपना रहा है जहां कि हिंसा का ही बोलबाला है और जहां अन्य जीव जन्तुओं की पीड़ा के प्रति रत्तीभर भी संवेदनशीलता नहीं है।

सभ्यता का जिसे हम 'विकास' कहते हैं उसके साथ – साथ हमारी मनुष्यता समाप्त सी होती हुई प्रतीत हो रही है। आज से हजारों वर्ष पूर्व युनान देश के एक महान दार्शनिक – वैज्ञानिक पायथागोरस ने जिस अकादमी की स्थापना की थी उसका आधार था पशुओं के प्रति प्रेम–भाव। किसी भी विद्यार्थी को जो मांसाहार करता हो इस अकादमी में दाखिला नहीं मिलता था क्योंकि पायथागोरस का यह अटल विश्वास था कि जब तक हममें पशुओं के प्रति करुणा की भावना नहीं है और जब तक, हम मांसाहार करते हैं हमारे मस्तिष्क का विकास असभ्भव है।

सैकड़ों बर्ष पहले मगध देश के पराक्रमी राजा सम्राट अशोक ने कलिंग–युद्ध में जब भीषण नरसंहार की लीला देखी तो उनका हृदय परिवर्तन हुआ। उन्होंने अहिंसा को अपना धर्म बनाया और न केवल मनुष्य मात्र के प्रति बल्कि पशुपक्षियों के कल्याण हेतु जीवन समर्पित करने का प्रण लिया। कितने विमुख हो चुके हैं हम अपने पूर्वजों द्वारा दिखाये गये पथ से। क्या यही है हमारी सभ्यता का 'विकास'।

आज हम अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों का बख़ान करते नहीं थकते। हम अपनी आर्थिक और औद्योगिक उन्नति का गुणगान करते नहीं थकते। हम अपनी नयी शिक्षा नीति का ढ़िंढोरा पीटते हैं और हमें गर्व है अपनी बुलन्द लोकतान्त्रिक संस्थाओं पर। संसार के किसी देश में जब कहीं मानवाधिकारों के हनन का विषय प्रकाश में आता है तो हम 'हाय–हाय' चिल्लाकर उसकी भर्त्सना करते नहीं थकते। परन्तु क्या कभी हमने जीवजन्तुओं के अधिकारों के बारे में भी विचारा है जिनका कि निरापद हनन विश्व के प्रत्येक देश के प्रत्येक कोने में निरन्तर होता रहता है। क्या कभी हमने

पशुओं के प्रति अपने कर्तव्यों व दायित्वों के बारे में सोचा हैं।

पशुओं पर किये गये प्रत्येक अत्याचार का परिणाम मनुष्य की वर्तमान मानसिक विपदा में दृष्टिगोचर होता है। यह एक मौलिक सत्य है कि जब तक मनुष्य पशुओं के प्रति भ्रात्रीवत व्यवहार करना नहीं सीखता उसका कल्याण असम्भव है। जब तक विश्व में पशुओं का अन्धाधुंध कत्ल–ए–आम जारी रहेगा, मनुष्य जाति युद्ध, अशान्ति और महामारी के दुष्चक्र से बच नहीं सकती। अतः हमारी बुद्धिमता इसी में है कि हम इस महासत्य को स्वीकारें और विनाश के कगार पर खड़ी अपनी सृष्टि को संवारें।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है – हम किस प्रकार की धरोहर अपनी आनेवाली पीढ़ी के लिये छोड़ जायेंगे। क्या हमारा दायित्व नहीं बनता कि हम अपने नन्हें–मुन्हें बच्चों में प्रारम्भ से ही सभी पशु–पक्षियों के प्रति करूणा की भावना का विकास करें उन्हें ये अनुभव होनें दें कि वास्तव में जीवजन्तु कल्याण में ही मनुष्य का निजी कल्याण निहित है।

इस दायित्व को यदि हम गम्भीरता से निभाना चाहते हैं और इस दिशा में यदि हमें वास्तव में कोई प्रगति प्राप्त करनी है तो यह आवश्यक हो जाता है कि स्कूल कॉलेजों की पढ़ाई में मानवीय शिक्षा को एक अभिन्न अंग के रुप में मान्यता प्रदान की जाये। हमारे शिक्षाविदों को चाहिये कि वे स्कूल और कॉलेजों के लिये ऐसे पाठ्यक्रमों का निरुपण करें जिनमें पशुओं के प्रति मानवीय व्यवहार को समुचित स्थान मिले। शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद और व्यवहारवाद जैसे न जाने कितने ही सिद्धान्तों की व्यापक चर्चा तो प्रायः सुनने में आती है, परन्तु शिक्षा के मानवीय पहलु की ओर जो कि एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण पक्ष है शायद ही किसी शिक्षाशास्त्री का ध्यान जाता हो।

आज के विश्व में बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है – परन्तु दुर्भाग्यवश शिक्षा का अभिप्राय पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित होकर रह गया है। शिक्षा का अर्थ महज भौतिक स्त्रोतों का यथासम्भव उपयोग ही माना जाने लगा है। आज के बालक बालिकाओं को कम्प्यूटर विज्ञान और आन्तरिक्ष विज्ञान की शिक्षा तो बड़े ही उत्साह से दी जाती हैं, परन्तु मानवीय शिक्षा की ओर हमारा ध्यान बिल्कुल नहीं जाता। वास्तव में यह मानवीय शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसके बिना कोई भी शिक्षा अधूरी है।

प्रश्न उठता है कि मानवीय शिक्षा क्या हैं, इसका क्या उद्देश्य हैं? मानवीय शिक्षा से अभिप्राय है शिशुओं के कोमल हृदय में प्रेम व करुणा जैसे उदात्त और भव्य भावनाओं का बीजारोपण करना। प्रेम और करूणा के इन सौम्य सिद्धान्तों पर ही हमारी सुखशान्ति, सुरक्षा और समृद्धि निर्भर है।

मानवीय शिक्षा को व्यवहारिक रुप प्रदान करने के लिये आवश्यक है स्कूल की पढ़ाई में कोई निश्चित घंटा केवल इसी विषय के अध्ययन हेतु निर्धारित हो। इस

शेष पृष्ठ ३०पर.....

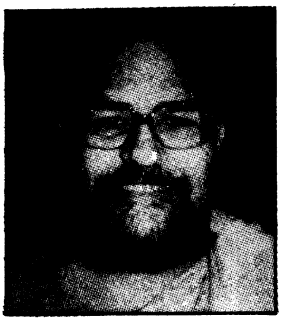

समाचार दर्शन

परम श्रद्धेय आचार्य श्री की निश्रा में नडियाद में ज्ञान मंदिर का उद्घाटन आणंद में त्रिदिवसीय महोत्सव चातुर्मास प्रवेश ९ जुलाई को होगा।

परमपूज्य राष्ट्रसंत सौधर्मबृहत्तपागच्छीय जैन संघ के गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी की पावन निश्रा में नडियाद में १० जून को श्री राजराजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर का उद्घाटन थराद निवासी अदाणी गगलदास नागरदास के शुभ हस्ते हुआ। गुरू मन्दिर का उद्घाटन भणशाली हरिलाल अभूलखभाई एवं पेढी का उद्घाटन पारेख केशवलाल खेतसीभाई के द्वारा सम्पन्न हुआ। एतदर्थ पंचान्हिका महोत्सव सम्पन्न हुआ।

आणंद में त्रिदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत दि. १५–१६ व १७ जून को अट्ठारह अभिषेक श्री संघ की ओर से, श्री सिद्धचक्र पूजन गांधी केशवलाल डाह्यालाल की ओर से, एवं श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा सेठ अमूलख मगनलालजी की ओर से पढायी गयी।

आस पास के नगरों में शासन प्रभावना करते हुए सूरत में असाडसुदि १० दि. ९–७–९२ को अपने शिष्यों के साथ चातुर्मासार्थ प्रवेश करेंगे। इस अवसर पर सूरत में श्री राज राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर का उद्घाटन जैनरत्न अखिल भारतीय त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अहमदाबाद निवासी सेठ गगलदास हालचंद संघवी के करकमलों से संपन्न होगा। प्रवेश की तैयारियाँ जोरों से चल रही है। इस अवसर पर बाहर गांव से अनेक गुरुभक्तों का पदार्पण होगा। अंतिथि विशेष के रूप में अ. भा. त्रिस्तुतिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष – श्री चेतनकुमारजी काश्यप (रतलाम) व अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष – श्री सेवंतीलाल मणीलाल मोरखीया (बम्बई) पधारेंगे। स्वामीवात्सल्य का लाभ चोराऊ (राजस्थान) निवासी श्री आसुलाल, घेवरचंद, सुखराज, भँवरलाल, चुनीलाल बेटापोता मादाजी पालरेचा परिवार ने लिया है। १० जुलाई से पंचान्हिका महोत्सव प्रारंभ होगा। जिसमें भक्तामर महापूजन भी पढाया जायेगा।

चातुर्मास दरम्यान पूज्य आचार्य श्री से पत्र व्यवहार का पता

प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर
गोपीपुरा, हनुमान चार रास्ता, मेन रोड, सुरत (गुजरात)

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी की निश्रा में विविध शासन प्रभावना

आकोली – श्री आदिनाथ जिन मंदिर पुनः प्रतिष्ठा के ३० वर्ष के उपलक्ष में १८ अभिषेक सह अष्टान्हिका महोत्सव ६ दिवसीय स्वामीवात्सल्य सह वैसाखसुदि ३ से ११ तक सम्पन्न हुआ।

डुडसी – तपस्वी मुनिश्री चेतनविजयजी के स्वर्गवास के एक वर्ष निमित्त उनके सांसारिक सुपुत्र पारसमलजी आदि परिवार की ओर से १८ अभिषेकसह अष्टान्हिका महोत्सव वैसाखसुदि १२ से जेठवदि ४ तक एवं स्वामीवात्सल्य सम्पन्न हुआ।

सियाना – शा. रिखबचंदजी हेमाजी पालरेचा के स्वर्गवास निमित्त जेठवदि ६ से १२ तक १८ अभिषेकसह अष्टान्हिका महोत्सव एवं स्वामीवात्सल्य सम्पन्न हुआ।

सियाना – श्री सुविधिनाथ जैन मंदिर में ध्वज दंड की पुनः प्रतिष्ठा के २५ वर्ष के उपलक्ष में जेठवदि १३ से जेठसुदि ३ तक १८ अभिषेकसह पंचान्हिका महोत्सव एवं स्वामीवात्सल्य सम्पन्न हुआ।

आकोली – शा. जुगराजजी चंदाजी की ओर से उनकी मातुश्री के स्वर्गवास निमित्त जेठसुदि ५ से १२ तक भक्तामर महापूजनसह अष्टान्हिका महोत्सव एवं स्वामीवात्सल्य सम्पन्न हुआ।

भैंसवाडा – शा. हंजारीमलजी चमनाजी नाहरगोता की ओर से जीवित अट्ठाई महोत्सव स्वामीवात्सल्यसह जेठसुदि दि. ११ से आषाढ़वदि ३ तक सम्पन्न हुआ एवं पद्मावती सुनायी।

आहोर – शा. हस्तीमलजी साहेबजी के यहाँ आषाढ़वदि ४ को पद्मावती सुनायी गयी।

सांथु – चातुर्मास प्रवेश आषाढ़सुदि १० को होगा।

एक सुखद समाधान

प्राप्त समाचारों के अनुसार श्री शंखेश्वरतीर्थ के निकट पंचासर गांव में २९ मई को ठाकुरों द्वारा मुनिश्री धर्मचंद्रविजयजी पर हमला हुआ था (विगत शाश्वत धर्म के जून मास के सम्पादकीय में प्रकाशित हो चुकी है।) जिसका सुखद समाधान हो गया है। गांव में सम्पन्न एक स्नेह सम्मेलन में हमला करनेवालों ने जाहिर में माफी मांगी व ठाकुर समाज द्वारा वंश परम्परागत मछली नहीं पकड़ने की लिखित में प्रतिज्ञा ली गयी। मुनिश्री जंबुविजयजी एवं शिक्षा मंत्री श्री करसनदास सोनेरी की उपस्थिती में ली गयी प्रतिज्ञा के बाद जैन मुनियों ने जैन सिद्धान्त के अनुसार उन्हें क्षमा प्रदान कर आगे किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं करने का विश्वास दिलाया।

परिषद के प्रांगण से

शाखा परिषद नीमच द्वारा अभिनन्दन ग्रंथ वितरण समारोह

दि. १४ जून रविवार को ज्ञानमंदिर विधी महाविद्यालय नीमच कैंट के परिसर में मन्दसौर जिले के १६ साहित्यकारों का बहुमान किया जाकर उन्हें 'श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ' की प्रतियां भेंट की गई। ज्ञातव्य है कि इन साहित्यकारों की लेखनी ने अभिनन्दन ग्रंथ में योगदान दिया है। इस अवसर पर पं. मदनलालजी जोशी ने इस आयोजन की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए इसे एक अनुठी शुरूआत बताया। आपने बताया कि ग्रंथ सम्पूर्ण मानव जाति के लिये दिशा निर्देशक होगा।

श्री बालकवि बैरागी (पूर्व सांसद) ने कहा कि यह हमारा अहोभाग्य है कि हमारी लेखनी ने इस अभिनन्दन ग्रंथ में स्थान प्राप्त किया। आपने कहा कि यह ग्रंथ आचार्य श्री के जीवन के ५० वर्ष पूर्ण होने की स्मृति को चिर स्थायी बनाने हेतु समाज द्वारा प्रकाशित किया गया है।

उक्त कार्यक्रम शाखा परिषद नीमच द्वारा सौधर्म बृहत्पागच्छीय जैन संघ नीमच के सहयोग से आयोजित किया गया।

शोक श्रद्धांजली

नीमच–परिषद केन्द्रिय कार्यसमिति के सदस्य धर्मप्रेमी, सहृदयी, हंसमुख, मिलनसार, गुरूभक्त श्री ज्ञानचंदजी पोरवाल का ९ जून को रात्री में हृदयाघात से आकस्मित निधन हो गया।

आपने पिछले दिनों बाग में आचार्य श्री की निश्रा में आयोजित उपधान तप में आराधना की थी, आप धर्मानुरागी थे। आपके निधन से सम्पूर्ण समाज में शोक की लहर छा गई। स्थानीय परिषद शाखा ने शोक सभा आयोजित कर मृत आत्मा को श्रद्धांजली अर्पित की एवं परिवार के सदस्यों को यह आघात सहन करने हेतु प्रार्थना की।

जोधपुर – श्री उगमसीजी मोदी के पुत्र श्री महेन्द्र मोदी का असामयिक निधन २०–६–९२ को हुआ।

आपका पत्र मिला---

शाश्वत धर्म जब से आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित हो रहा है निरन्तर सुन्दर एवं सुव्यवस्थित तथा संग्रहणीय बनता जा रहा है। यह पत्र निरन्तर उँचाइयों को छूता रहे, इसी मंगल कामना के साथ।

– सुरेश डूंगरवाल – नीमच

समाचार – सार

- **नीमच** – मुनिराज श्री मंगलविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में पंच दिवसीय नमस्कारमहामंत्र के अखण्ड जाप सम्पन्न हुए। ४ जून को पुर्णाहूति पर विशाल चल समारोह आयोजित किया गया।
- **जोधपुर** – श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय जैन संघ द्वारा पर्युषण पर्व आराधना हेतु स्वाध्यायियों को निःशुल्क भिजवाने हेतु सम्पर्क करें – श्री चंचलमल चोरडिया, चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर (राजस्थान)
- **नरसापुर** – मुनि श्री दिव्यरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में वृहद् शांतिस्नात्र पढायी गयी, उस दिन नगर में कत्लखाने व मांस विक्री बंद रही।
- **लोनावला** – श्री जैन युवक संघटना व संपर्क संस्था भाजे (गांव) के तत्वावधान में मुफ्त आरोग्य चिकित्सा शिबिर ७ जून को आयोजित की गयी, जिसमें ६२३ मरीज लाभान्वित हुए।
- **आहोर** – श्री आहोर जैन चेरीटेबल ट्रस्ट – बम्बई, द्वारा श्री मिश्रीमलजी मांडोत को 'समाजरत्न' की पदवी से अलंकृत कर माला, शॉल व प्रतिक दिया गया।
- **बम्बई** – पू. आचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में १० दिवसीय तीसवाँ ज्ञानसत्र लालवाडी धर्मपुरी में आयोजित किया गया, जिसमें १०० बालकों ने भाग लिया।
- **लाडनूँ** – राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह शेखावत ने आचार्यश्री तुलसीजी की पहल पर केन्द्रिय कृषि–राज्यमंत्री श्री एस. लेंका की उस सलाह को अमान्य कर दिया है जिसके अनुसार राज्यों को अण्डा उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूलों में दोपहर के भोजन के साथ अण्डे देने के लिए कहा गया है। श्री शेखावत ने आचार्य तुलसीजी द्वारा ५ मई को लिखे गये पत्र के उत्तर में २९ मईं को जो पत्र लिखा है उसका एक मुख्यांश इस प्रकार है– 'मैं आपको सूचित कर रहा हूँ कि राजस्थान सरकार ने दोपहर के भोजन के साथ बच्चों को अण्डे देने की सलाह को अस्वीकार कर दिया है।

१ जून १९९२ से ३० जून १९९२ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य बनानेवाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल
श्री पारसमलजी वी. मूथा – लोनावला	—	—	३१	३१
श्री कन्हैयालालजी बांठिया – कानपुर	—	—	१०	१०
कार्यालय – थाने	४	—	२	६
	४	—	४३	४७

चातुर्मास निर्णय

प. पू. तीर्थ प्रभावक आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी.म. के आज्ञानुवर्ती श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय साधु साध्वी की चातुर्मास सूची

(१) **सूरत** – राष्ट्रसंत–गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद्विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. मुनिश्री नित्यानंद विजयजी म. मुनिश्री हेमरत्न विजयजी म. मुनिश्री विश्वरत्नविजयजी म. मुनिश्री सिद्धरत्न विजयजी म. मुनिश्री प्रशान्तरत्न विजयजी म.

(२) **जीवाणा (राजस्थान)** – संयम वय; स्थवीर मुनिश्री शान्तिविजयजी म. मुनिश्री जयरत्नविजयजी म., मुनिश्री अशोकविजयजी म., मुनिश्री आनन्दविजयजी म.।

(३) **भीनमाल (राजस्थान)** – मुनिश्री भुवनविजयजी म., मुनिश्री रामरत्नविजयजी म.।

(४) **सांथु (राजस्थान)** – मुनिश्री केवलविजयजी म., मुनिश्री जयानंदविजयजी म. मुनिश्री सम्यगूरत्नविजयजी म. मुनिश्री हरिश्चन्द्रविजयजी म.।

(५) **थराद (उ. गुजरात)** – मुनिश्री मुक्तिचंद्रविजयजी म., मुनिश्री वीररत्नविजयजी म. मुनिश्री अपूर्वरत्नविजयजी म., मुनिश्री नयरत्नविजयजी म.।

(६) **उज्जैन (म. प्र.)** – मुनिश्रीपद्मरत्न विजयजी म., मुनिश्री विद्वत्रत्नविजयजी म., मुनिश्री हर्षितरत्नविजयजी म.।

(७) **रेवतड़ा (राजस्थान)** – साध्वीश्री कुसुमश्रीजी, कुमुदश्रीजी, हर्षपूर्णाश्रीजी, मोक्षपूर्णाश्रीजी।

(८) **भीनमाल (राजस्थान)** – साध्वी श्री महाप्रभाश्रीजी, प्रियदर्शनाश्रीजी, सुदर्शनाश्रीजी। पुण्यप्रभाश्रीजी।

(९) **सूरत (गुजरात)** – साध्वीश्री भुवनप्रभाश्रीजी, चन्द्रयशाश्रीजी, शशीकलाश्रीजी, दिव्यदृष्टाश्रीजी, अविचलदृष्टाश्रीजी, अनुपमदृष्टाश्रीजी, अमितदृष्टाश्रीजी, अनंतदृष्टाश्रीजी, मयुरकलाश्रीजी, चारित्रकलाश्रीजी, भक्तिरसाश्रीजी।

(१०) **पालिताणा (गुजरात)** – साध्वीश्री स्वयंप्रभाश्रीजी, दमयंतिश्रीजी, कनकप्रभाश्रीजी, सुनंदाश्रीजी, सूर्योदयाश्रीजी, कैलाशश्रीजी, रत्नयशाश्रीजी, कैवल्यगुणाश्रीजी, मोक्षगुणाश्रीजी, दर्शितगुणाश्रीजी, विनितगुणाश्रीजी, वात्सल्यगुणाश्रीजी।

(११) **पाटण (गुजरात)** – साध्वीश्री प्रेमलताश्रीजी, पूर्णकिरणाश्रीजी, कल्पलेखाश्रीजी।

(१२) **महिदपुर (म. प्र.)** – साध्वीश्री कल्पलताश्रीजी, हितप्रज्ञाश्रीजी, सौम्यगुणाश्रीजी, विद्वत्गुणाश्रीजी, वैराग्यगुणाश्रीजी।

(१३) **सियाणा (राजस्थान)** – साध्वीश्री महिलाश्रीजी, स्नेहलताश्रीजी, शशीप्रभाश्रीजी, तत्वलताश्रीजी, विज्ञानलताश्रीजी।

(१४) **सांथु (राजस्थान)** – साध्वीश्री कोमललताश्रीजी, शासनलताश्रीजी, अनेकान्तलताश्रीजी, यशोलताश्रीजी।

(१५) **जीवाणा (राजस्थान)** – साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी, अरूणप्रभाश्रीजी, सम्यगूप्रभाश्रीजी, शरद प्रभाश्रीजी।

(१६) **राणापुर (म. प्र.)** – साध्वीश्री अनंतगुणाश्रीजी, भव्यगुणाश्रीजी, अक्षयगुणाश्रीजी, समकितगुणाश्रीजी, सिद्धान्तगुणाश्रीजी, शीतलगुणाश्रीजी।

(१७) **अहमदाबाद (गुजरात)** – साध्वीश्री आत्मदर्शनाश्रीजी, वसंतमालाश्रीजी सम्यगूदर्शनाश्रीजी, रंजनमालाश्रीजी, चारूदर्शनाश्रीजी।

(१८) **थराद (गुजरात)** – साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी, हर्षदर्शनाश्रीजी।

(१९) **बागरा (राजस्थान)** – साध्वीश्री दिव्यदर्शनाश्रीजी।

(२०) **धार (म. प्र.)** – साध्वीश्री दर्शितकलाश्रीजी, दर्शनकलाश्रीजी, जीवनकलाश्रीजी।

जालोर नगर में श्री राजेन्द्र–जयन्त सम्यग्ज्ञान कन्या शिक्षण शिबिर

प. पूज्यतीर्थ प्रभावक साहित्यमनीषी प्रशमरस महोदधि राष्ट्रसंत वर्तनाचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की शुभाज्ञानुवर्तिनी वयोवृद्धा सरलस्वाभाविनी साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. विदुषि डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं विदुषी डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म. सा. की पावन निश्रा में दिनांक २८ मई १९९२ से भव्य समारोह पूर्वक आरंभ ग्यारह दिवसीय कन्या ज्ञान शिविर सौल्लास दिनांक ७ जून १९९२ को भव्य समापन समारोह के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

प्रातः ९ बजे ओसवाल न्याति नोहरे में समापन–समारोह प. पूज्य श्री जयानन्दविजयजी म. सा. द्वारा मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। भाव विभोर होकर पाली की बालिकाओं ने सरस्वती वंदना की।

जोधपुर निवासी श्री देवीचन्दजी ने समारोह का अध्यक्षपद, श्री मिलापचन्दजी सेठ आहोर ने मुख्य अतिथि पद व श्री सोमतमलजी दोशी भीनमाल वालों ने विशिष्ठ अतिथि का पद सुशोभित किया।

इस शिविर के छः आयोजकों का शिविरार्थिनी छात्राओं द्वारा तिलक, माल्यार्पण व नारियल भेंट का स्वागत किया। आहोर निवासी मुथा छगनराजजी मांडोत, पाली निवासी हनवंतचंदजी मेहता, खिमेल निवासी कांतिलाल खीमावत, रानी निवासी खीमराजजी संघवी, सुरा निवासी मनोहरमलजी कांकरिया एवं वाकरा निवासी उकचंदजी जगाजी सालेचा को आभार स्वरूप अभिनंदन–पत्र भेंट किया। शिविर की उपलब्धि व उपयोगिता से प्रभावित होकर आगामी ग्रीष्म कालीन शिविर के आयोजन का बीड़ा उठाने के लिए निम्न भाग्यशालिओं ने अपनी स्वीकृति दी जिसकी घोषणा की गई :–

(१) आहोर निवासी मुथा रतनचन्द छगनराजजी मांडोत
(२) शा. शेषमलजी मगनाजी, आहोर
(३) शा. सरेमलजी मिश्रीमलजी पारसमल कंकू चौपड़ा
(४) शा. झुमरलालजी सिंघवी, आहोर
(५) शा. मदनराजजी देवीचन्दजी, भीनमाल
(६) मांडोत कुशलराजजी आहोर तथा पुरस्कार के लिए आहोर निवासी सी. वी. भगत ने राशि देने की घोषणा की।

इस शिविर में जालोर, आहोर, पाली, भीनमाल, रेवतड़ा व बालोतरा आदि नगरों की ९६ शिविरार्थिनी बहनों ने भाग लिया। तत्पश्चात् शिविर परिक्षा परिणाम घोषित किया गया। 'अ' वर्ग में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान कु. चन्द्रा – जालोर, द्वितीय स्थान कु. ममता – भीनमाल एवं तृतीय स्थान कु. मिन्टू – भीनमाल ने प्राप्त किया। 'ब' वर्ग में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान कु. रेखा – आहोर द्वितीय स्थान कु. मीना – जालोर एवं तृतीय स्थान कु. निर्मला – जालोर ने प्राप्त किया। 'स' वर्ग में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान कु. ममता – पाली द्वितीय स्थान कु. रूचिका – पाली एवं तृतीय स्थान वनिता – आहोर ने प्राप्त किया।

शिविर आयोजकों द्वारा शिविर – संचालक श्री सुकनचंदजी जैन – रानी निवासी का बहुमान किया गया। शिविर संचालन में विशेष सहयोग हेतु मंदसौर निवासी श्री शेषमलजी चौरड़ीया व कुमारी डॉ. शशीबालाजी का भी बहुमान किया गया।

इस अवसर पर पूर्व प्रकाशित 'रा' प्रश्नावली के परिणाम घोषित किये गए। इसके साथ ही शिविरकाल में सभी छात्राऐं विनय, विवेक, संयम, सदाचार, अनुशासन एवं स्वावलम्बी जीवन – कर्तव्य पालन का पाठ सीखकर अपने जीवन में कुछ न कुछ नियम लेकर विदा हुई।

प. पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी म. एवं डॉ. सुदर्शनाश्रीजी म. ठाणा तीन का चातुर्मास इस वर्ष भीनमाल (राजस्थान) में होना निश्चित हुआ है।

(1.) सरस्वती वंदना करती हुयी शिबिरार्थिनी छात्रायें
(2.) 'अ' वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती हुयी कु. चंद्रा- जालोर
(3) 'ब' वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती हुयी कु० रेखा- आहोर
(4) 'स' वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती हुयी- ममता- पाली

शब्दसागर इनामी स्पर्धा १० के परिणाम एवं उत्तर

परिणाम : निम्नांकित प्रतियोगी इस स्पर्धा में सफल रहे –

१) कु. मीना मेहता – जालोर (सदस्य संख्या – डी–१२३३) २) कु. मंजु मेंगलवा – मदुराई (सदस्य संख्या – डी–७७१) ३) श्री संजयकुमार मेहता – झाबुआ (सदस्य संख्या – सी–११४०)

तीनों उत्तीर्ण प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप रूपये ५००/– पांचसौ समान भाग – १/३ = १६५/– रूपये नगद म. आ. द्वारा भेज दिये गए हैं।

इनका प्रयास भी सराहनीय रहा – १) पंकज मेहता सी–९७६, २) कु. रेखा – मदुराई, ३) श्री कपिल पो. सित्रा – बाग जी–२०४, ४) श्री आशिष संघवी – बाग सी–११०२, ५) श्री किशोर गोवानी – नैलोर सी–४१८, ६) श्री वसंतीलाल जैन – पूना सी–१०१५, ७) श्री सुमेरमलगोलेच्छा, सी–५४८, ८) श्री अमृतलाल – बाग, सी–११२६, ९) कु. शर्मिला – मदुराई जी–२०५, १०) आशिष जैन – बाग डी–९३९, डैडी बाग।

उत्तर – बाए से दांयी ओर – १) नाराज ४) अभिग्रह ७) द्रव्य ९) जरासंध ११) हरा १२) आग १३) हकार १५) महेन्द्र १७) गढ़ १८) सारङ्गी २२) श्रीमाला २४) कुमार २६) अंजना २८) घी २९) शासन ३१) नारद ३४) शहनाई ३५) दशरथ ३६) डाकु ३८) नीलम ४०) चीकु ४२) पालन ४३) पार ४४) सुरण ४५) झालर।

उपर से नीचे की ओर – २) राजगढ़ ३) जरा ४) अंधकार ५) ग्रह ६) हराम व्यय १०) सहसा १२) आगरा १४) रंगी १६) हेत श्री १९) माला २०) भामाशाह २१) अंजना २३) माली २५) रसना २७) नारद ३०) नई ३२) दशपुर ३३) रथनुपुर ३४) शकुनि ३७) शकुन ३९) लक्षण ४०) चील ४१) वसु ४२) पाप ४३) पार।

इस अंक में प्रकाशित ज्ञान कसौटी के उत्तर

१) अपयश कीर्ति २) अवर्णवादी, ३) अप्रतिष्ठान ४) अनंतानुबंधी कषाय ५) अनादि ६) आत्मज्ञान ७) आराधना ८) आलोचना ९) आस्था १०) अरनाथ ११) अपापापुरी १२) अनादि १३) अनंत १४) अनुमोदन १५) आहार १६) आगाह १७) अणगार १८) आँगी १९) अगासी २०) अजीव एवं आश्रव २१) आर्द्रा २२) आर्य २३) अग्नि २४) अप् २५) अहिंसा।

સત્યકથા

અધુરૂં મંદિર

—શ્રી પૂર્ણચન્દ્ર વિજયજી ગણિવર

કોઈ સાધના એવી નથી કે, જે એના સાધક પાસેથી થોડો ઘણો આત્મભોગ ન માંગે! સુવર્ણને કસોટીનો કપરો કાળ પસાર કરવો પડે છે! સાધકનાં જીવનમાં પણ કોઈ પળ એવી ઉગી જાય છે, જ્યારે સાધકને એ પળ સામે ઝઝુમવું પડતું હોય છે અને સાધનાનું શહૂર જાળવવા જાત/જાત સાથે બાજી ખેલી લેવી પડતી હોય છે.

ત્રણસો ચારસો કાળનો લોખંડી-પડદો ઉપાડીને આજના અજોડ તીર્થ કાપરડાનું દર્શન કરીશું, તો એક પળ એવી નજરે ચઢશે, જે પલે સાધક પોતાની સાધના કાજે અણનમ ખડો રહેલો દેખાશે!

ખરી બપોર જામતી જતી હતી. સૂર્યનું એકએક કિરણ જ્વાળા બનીને નીચે ઉતરતું હતું. ચોમેર મૃગજળનાં જળ વહી રહેલાં જણાતાં હતાં.

જયતારણથી લાંબી ખેપ ખેડીને એક ટોળી કાપરડાને પાદરે તંબૂ તાણીને પડી હતી અને એ ટોળી ભાણાજી ભંડારીને એક ગુનાહિત વ્યક્તિ તરીકે જોધપુર લઈ જતી હતી.

જયતારણના આગળ પડતાં કર્મચારી-ભાણાજી ભંડારી! ચંદ્રમામાં કલંક શોધી કાઢનારી જનતા પણ ભંડારીને અકલંક માનતી, જયતારણ જ નહિ, આજુબાજુનો પ્રદેશ પણ ભંડારીને નેકી. ઈમાન અને ધર્મની મૂર્તિ રૂપે જોતો! એથી જ્યારે ભંડારી પર આરોપનું તહોમતનામું લઈનેજોધપૂરના રાજદૂતો જયતારણ આવ્યા, ત્યારે બધાએ કમ્પ અનુભવ્યો. પરંતુ સત્તા આગળ શાણપણ નકામું હતું! બધાને ભંડારી પર સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા હતી! બીજે જ દિવસે સવારે ભંડારી જોધપૂર દરબારમાં હાજર થવા માટે નીકળી પડયા. આખું જયતારણ એમનું કલ્યાણ વાંછવા પૂર્વક એ પ્રવાસને જોઈ રહ્યું!

જયતારણથી નીકળેલા ભંડારી જ્યારે કાપરડાની ભાગોળે આવ્યા.ત્યારે મધ્યાન્હ શુરૂ થઈ ગયો હતો. ત્યારે કાપરડામાં ન મંદિર હતું! ન મૂર્તિઓ હતી! જૈનોની થોડી ઘણી વસ્તી જરૂર હતી, અને ગામની મધ્યમાં એક પોષાળ હતી, ત્યાં અવારનવાર કોઈ યતિઓ આવી ચડતા!

ભંડારી એકલા કર્મચારી જ નહિ, ધર્મચારી પણ હતા, ભગવાનના દર્શન-પૂજન સિવાય એક દાણો પણ એઓ મોંમાં નાંખતા ન હતા. ભજન વિનાના ભોજનને એઓ ઝેર લેખતા હતા!

ભંડારી ગમે તેમ તોય રાજ્યના એક, આગળ પડતા માણસ હતા, લોકપ્રેમ ને જનચાહ એમને મળેલો હતો, એઓ એક ગુનાહિત તરીકે અત્યારે હતા, તેથી શું? માન-સન્માન સાથે ભંડારીને જોધપુર લાવવાની આજ્ઞા હતી. ભોજનની સામગ્રી તૈયાર થઈ ગઈ. ભાણામાં ભોજન પીરસાઈ ગયું. ભંડારીને બધાંએ ભોજન માટે આમંત્રણ આપ્યુ.

ભજન બાકી હતું, પછી ભોજન કેવું?

ભૂખ અસહ્ય લાગી હતી. પ્યાસ પણ ખૂબ જ લાગી હતી. છતાંય ભંડારીએ પોતાની પ્રતિજ્ઞા આગળ ધરી અને રાંધ્યા ભોજન એમ ને એમ પડી યા!

કર્મચારિઓ કાપરડા-ગામમાં મંદિર-મૂર્તિની ખોજ કાજે નીકળી પડ્યા, ભંડારી તો પોતાની પ્રતિજ્ઞામાં અણનમ જ હતા! કાપરડાનો ખૂણે-ખૂણો જોઈ વળ્યા પછી એટલી જ વાત કર્મચારીઓના હાથમાં આવી કે, અહીંની પોષળમાં એક યતિજી રહે છે. કદાચ એ પોષાળમા એમણે એકાદ પ્રતિમા દર્શન-વંદન માટે રાખી પણ હોય!

વાત સાચી નીકળી. પોષાળમાં એક વૃદ્ધ યતિજી હતા ને એક પ્રતિમાજી પણ હતા!

કર્મચારીઓ હસતે મોઢે ભંડારી પાસે આવ્યા. એમણે બધી વાત કરી અને ભંહારીજી ગામમાં આવ્યા

એ યુગ ચારિત્રનો હતો. અને ચારિત્રને ચરણે મંત્રતંત્ર સદૈવ આળોટતાં જ રહે, એમાં શી નવાઈ ગણાય?

ભાણાજી ભંડારીને જોતાં જ યતિજીને એ સાવ નિર્દોષ જણાયા! ભંડારીએ બધી વાતો યતિજીને કહી સંભળાવી અને છેલ્લે વાસક્ષેપ કરતા યતિજીએ એમને આશીર્વાદ આપ્યા:

'ભંડારી! સાચને કદી આંચ નથી, તમે સાચા છો, તો તમને ઉની આંચ પણ નહિ આવે!'

યતિજીના મનમાં એક વાત વર્ષોથી ઘોળાઈ રહી હતી, એઓ આ કાપરડામા એક ભવ્ય-મંદિર જોવા માંગતા હતા. પોતાના એ ચિર-દૃષ્ટ સ્વપ્નને સત્યની કેડીએ લઈ જાય, એવી અગમ્ય શક્તિ-ભક્તિ એમને ભંડારીજીમાં જણાઈ આવી!

દર્શન અને પૂજન પછી ભંડારીનાં મનનો કોઈ અગમ્ય-સ્રોત જાણે ખુલી ગયો હતો અને આનંદનાં જળ વહી ચાલ્યા હતાં!

યતિજીના આશીર્વાદ લઈને ભાણાજી ભંડારી વિદાય થયા! યતિજી એ વિદાય તરફ જોતા જ રહ્યા. શ્રદ્ધા જાણે બોલતી હતી કે....

'કાપરડાનું આ શૂન્ય વાતાવરણ થોડાં જ દિવસોમાં સર્જનનાં ટાંકણાઓથી ગૂંજી ઊઠશે અને અહીં એક ગગનચુંબી મંદિર ખડું થશે!'

યતિજી આનંદી ઊઠ્યા, પરંતુ ત્યારે કોઈ અજ્ઞાત સાદ આવ્યો:

'પણ અધુરૂં! અધુરૂં મંદિર!!'

યતિજી ચોંકી ઊઠ્યા. પણ એમને પળ પછી જ એ સાદ ભ્રમનું સંતાન જણાયો ને પાછા ગગનચુંબી મંદિરની કલ્પનામાં એઓ ખોવાઈ ગયા!

બન્યું પણ એમ જ! યતિજીએ આપેલા એ આશીર્વાદ વાસા નીવડ્યા અને સાચને આંચ પણ ન આવી!

ભંડારીજી જોધપુરના દરબારમાં હાજર થયા. પણ કાપરડામાં બનેલા પ્રસંગે ભંડારીજી પર બધા કર્મચારીઓનો પ્રેમ સ્થાપી. આપ્યો હતો: બીજા દિવસની સભામાં ભંડારીની ચર્ચા મુલતવી રહી!

ભંડારીની સાથે આવેલાં માણસો દ્વારા કાપરડાનો પ્રસંગ જ્યારે જોધપુર-નરેશે જાણ્યો, ત્યારે એમને ચોટ લાગી ગઈ કે, પોતે ભંડારી પર કદાચ અન્યાયી પંજો પ્રસારતા હોય!

બીજા દિવસે ભંડારી સભામાં હાજર થયા. પણ એમના મો પર ભૂલ નહોતી વંચાતી, ખીલેલાં ફૂલનું સૌન્દર્ય ત્યાં વેરાયેલું જણાતું હતું!

રાજાઓનાં કાન હમેશા હાથીના કાન હોય છે, જે કહી સ્થિર ન રહી શકે! જોધપુરના મંત્રીએ પોતાના રાજાની કાનભંભેરણી કરીને ભંડારી પર વહેમ ઊભો કર્યો હતો અને તહોમતનામું મોકલાવ્યું હતું રાજાને આ ભૂલ અત્યારે સ્પષ્ટ જણાતી હતી. આજની સભામાં જ એનો નિર્ણય થવાનો હતો!

મંત્રીશ્વર આવી ગયા. ભંડારીજી પણ આવી ગયા. અને વાત શરૂ થઈ!

મંત્રીઓ જે જે વાતો ઉપજાવી કાઢેલી હતી, એના ખુલાસા ભંડારીજી આપતા ગયા અને ઘણી લાંબી ચર્ચાને અંતે જાહેર થયું કે, ભાણાજી ભંડારી સાવ નિર્દોષ છે! અને એમની નિર્દોષ કારકીર્દીને અભિનંદવા રાજ તરફથી ૫૦૦ સુવર્ણમુદ્રાઓ એમને ઇનામ આપવામાં આવે છે!

જ્યાંથી કલંકનો ભય હતો, ત્યાંથી કીર્તિની કલગીઓ મળી! સચ્ચાઈનું એ સભામાં સન્માન થયું અને એ જ દિવસે ભાણાજી ભંડારી જયતારણ તરફ પાછા ફર્યા!

બીજા દિવસની બપોર થવા આવી અને પાછું એ જ કાપરડા આવ્યું, જ્યાં મળેલા આશીર્વાદને જ ભંડારીજી પોતાનો વિજયમંત્ર માનતા હતા, સચ્ચાઈની એ જીતની સમાચાર યતિજીને કહી સંભળાવવા ભંડારીજી ગામમાં પહોંચ્યા!

ભંડારીને આવતા જોઈને જ યતિજીનું મન પાછું સપનાનું સંગી બન્યું ને એમની આંખ સામે એક વિરાટ મંદિર ઉપસતું ચાલ્યું!

દર્શન-પૂજન કરીને જતી વખતે ભંડારી આશીર્વાદ લેવા યતિજીની પાસે આવ્યા અને એમણે પોતાનું દિલ ખોલ્યું:

'યતિજી! આપના આશીર્વાદ જ મારી જીતનો મૂલમંત્ર બન્યો છે, એથી કામ-સેવાના કોઈ પણ પ્રસંગે મને જરૂર સંભારજો!'

પોતાના સ્વપ્નને સાકાર બનાવવાની આ પળને યતિજી ન ચૂક્યા. એમણે કહ્યું:

'ભંડારીજી! કાપરડાની આ ભૂમિ પરે ભવ્ય જિનમંદિરનું સ્વપ્ન મને વારંવાર લાધે છે. મારાં આ સ્વપ્નને અહીંની ભૂમિ પર ઉતારે, સેવા કોઈ બડભાગીની શોધમાં હું મારાં દિન-રાત વીતાવુ છું.'

ભંડારીજી વાતને પામી ગયા. એમને થયું: મારૂં એવું ભાગ્ય ક્યાંથી કે મારી દોલત દેવાલયમાં ખર્ચાય? છતાંય એમણે એક પ્રસ્તાવ મૂક્યો:

'યતિજી! દોલત વિના દહેરૂ કેવું? મારી પાસે એટલા પૈસા નથી, નહિ તો એ લાભ હું જતો ન કરૂં!'

યતિજી ભંડારીની ભાવના સમજી ગયા. પણ એમને જેટલી જરૂર દોલતની હતી,

એથી ય વધુ જરૂર દિલની દિલાવરની હતી. જે માણસ પાયાથી માંડીને પ્રાસાદ-શિખર સુધી આત્મભોગ આપે, એવા માણસની શોધમાં યતિજીની આશામીટ હતી અને ભંડારીમાં અમને આવા દિલના દર્શન લાધ્યા હતા, એથી અમણે સીધી જ વાત કરી:

'ભંડારી! દોલતની જવાબદારી મારી! દિલ દઈને પાયાની ઈંટથી માંડીને શિખરના કળશ સુધી આત્મભોગ આપવાણી તમારી તૈયારી છે? જો હોય, તો નિર્જન ને નિરવ ભાસતું આ કાપરાડા કાલથી જ ગૂંજી ઊઠે અને શિલ્પીઓના સંઘ અહીં આવવા માંડે!'

ભંડારીજી આનંદમાં આવી ગયા. એમને કલ્પના પણ ન હતી કે પોતે આવું વિરાટ ઉત્તર-દાયિત્વ સ્વીકારે; એવી પાવની આ પળ હશે? જવાબદારી લેવાનો ઉત્સાહ ભંડારીજી પાસે બોલાવી ગયો:

'યતિજી! એ જવાબદારી મારી! પાયાની ઈંટે પણ હું બનીશ! અને શિખરનો કળશ પણ હું જ બનીશ!! દોલત આપની દિલ મારૂ. ને દેરૂ સહુનું!'

યતિજીનો મનમયૂર હવે નાચી ઉઠ્યો. એમના કાનની સામે જાણે આષાઢી મેઘની ગર્જના શા સર્જન ટંકણાઓના ધ્વનિ અથકાઈ રહ્યા! પોતાની પાસે રહેલા મંત્રાધિષ્ઠિત વાસક્ષેપને હાથમાં લેતા યતિજી બોલ્યા:

'ભંડારીજી! જોધપુર નરેશે સુવર્ણ મુદ્રાઓની જે થેલી ઈનામમાં આપી છે, એ થેલીને હું અક્ષયપાત્ર બનાવવા માંગુ છું!'

ભંડારીજીએ સુવર્ણ મુદ્રાઓની થેલી યતિ-ચરણે સમર્પિત કરી દીધી. યતિજીએ એની પર વાસક્ષેપ કરીને એક સૂચના આપતા કહ્યું:

'ભંડારીજી! આજથી આ થૈલી અક્ષય પાત્ર બને છે! પણ શરત એટલી કે, આને તમે ઉંધી ન વાળતા! જેટલી મુદ્રાઓ જોઈએ, એટલી મુદ્રાઓ આ થેલી તમને આપશે, પોતે ખાલી નહિ થાય! પણ જે દિવસે આ થેલી ઉંધી વળશે અને એમાં રહેલી બધી મહોરો બહાર ઠલવાશે, એ જ દિવસથી એનો પ્રભાવ ઊડી જશે! જાવ, ફત્તેહ કરો! મારાં તમને આશિર્વાદ છે કે, અહીં તમે સ્વર્ગને ઉતારી શકશો. પણ સારા કામમાં ઢીલ ન કરતા. જેમ બને એમ જલદી મંદિરનું કામકાજ શરૂ થવું જોઈએ.'

ને એ દિવસે યતિજીએ શાંતિનો શ્વાસ લીધો. એમનું દિલ હવે એ દશ્ય જોવા ઝંખતું હતું કે, ક્યા આંખ ખુલે, ત્યાં વિરાટ મંદિરના દર્શન થાય!

ભંડારીજી થોડાં જ દિવસોમાં પાછા કાપરડા આંવ્યા, ત્યારે એમની સાથે એક મોટો શિલ્પી-સંઘ પણ હતો. શુભ પળે મંદિરનો પાયો ખોદાયો! યતિજીનું સ્વપ્ન સ્વર્ગને નીચે ઉતરવાનું હતું, તો ભંડારીજીની ભાવના પણ ભવ્ય હતી. દુનિયાભરમાં જે બેજોડ હોય, એવું મંદિર એમને કાપરડામાં ઉભું કરવું હતું!

દિવસો વીતવા માંડ્યા ને મંદિર ઉંચે ચડવા માંડ્યું! પણ...?

વિધિની વાંછા કોઈ જુદી હશે? કુદરતની કામના પણ કોઈ વિચિત્ર હશે? એ મંદિર અધૂરું રહેવાને જ સર્જાયું હશે?

વિધિએ વળાંક લીધો! એક દિવસ આવું બન્યુ કે, ભંડારીજી પોતાના પુત્રને એ

અક્ષય-થેલી સોંપીને બહારગામ ગયા. રાજના કાજ હતા. એટલે ગયા વિના ચાલે એમ ન હતું. જતા જતા એમણે થેલી અંગે સૂચના પણ આપી હતી. પણ મંદિર અધૂરું જ રહેવાનું હશે ?

ભંડારીજીના પુત્રને રોજ આશ્ચર્ય થતું હતું કે, આ થેલીમાં એવો તે ક્યો ભેદ છૂપાયો હશે કે, આમાંથી રોજ રોજ અઢળક સુવર્ણ-મુદ્રાઓ કાઢવામાં આવે છે, તોય આ થૈલી ભરેલી ન ભરેલી જ રહે છે!

ને ભંડારીના એ પુત્ર થેલી ઉંધી વાળી! આ પછી સુવર્ણ-મુદ્રાની સંખ્યા ગણી તો પાંચસોની જ હતી. અંદર કોઇ ભેદી રહસ્ય જેવું ન જણાયું ને એ સોનામોહોરો એણે થેલીમાં પાછી ભરી દીધી! પર ખેલ હવે ખતમ થઇ ગયો હતો. મંદિર હવે અધૂરું જ રહેવાનું હતું!

બીજે દિવસ ભંડારી આવ્યા. એમણે આ વાત સાંભળી અને રોતી આંખે એઓ યતિજી પાસે પહોંચ્યા.બધી વિગત જાણ્યા પછી યતિજીએ પણ એક ઊંડો નિસાસો લીદો ને એ બોલ્યા :

'ભંડારીજી ' ખેલ હવે ખલાસ છે! વિધિની વાંછા જ એવી હશે / મંદિર હવે અધુરં જ રહેશે, જેટલું કામ થયું,એમાં સંતોષ માનો અને હવે પ્રતિષ્ઠાની કંકોતરીઓ લખવાનું કંકુ ઘોળો!'

ભંડારીજી દડ....દડ રડી પડ્યા, મંદિરની યોજના ભૂમિ પર હજુ અડધી જ ઉતરી હતી. મુખ્ય મંદિરના ચાર માળ તૈયાર થઇ ગયા હતા. અને ધરતીથી મંદિર નાવું (૯૦)ફૂટ ઉંચું આવી ગયું હતું, એનું શિખર સંપૂર્ણ તૈયાર થઇ ગયું હતું, પણ ભંડારીજીની ભાવના તો ચાર માળાના એ વિરાટ મંદિરની ચોમેર બાવન-બાવન દેરીઓ ચણાવવાની હતી અને એ દેરીઓનું કામ પણ શરૂ થઇ ગયું હતું. દસેક દેરીઓનો તો પાયો પણ પૂરાઇ ગયો હતો ને કામ ઉપર પણ આવી ગયું હતું!

ભંડારીજીએ યતિજીને ઘણી ઘણી વિનંતિ કરી. પોતાની એ ભૂલ બદલ એમણે ઘણો આંસુધારો વહાવી, પણ મંત્રશાસ્ત્રની આમ્નાયો એ થેલીને હવે અક્ષયપાત્ર બનાવવા સમર્થ ન હતી ને એથી જ યતિજીએ ભંડારીને પ્રતિષ્ઠાનીતડામાર તૈયારીઓથી કાપરડા ગૂંજી ઊઠ્યું!

શુભ પળે એ મંદિરમાં મુર્તિઓનું પ્રતિષ્ઠાન થયું!

મારવાડમાં આજે ય આ તીર્થ બેજોડ છે. જમીનથી નેવું ફૂટનું ઊંચાણ ધરાવતા આ મંદિરની હરીફાઇ કરી શકે, એવું ચૌમુખી મંદિર દુનિયાભરમાં નથી.

આ અધૂરા મંદિરની યાદ એની અધૂરી રહેલી દેરીઓ જોતાં આજે ય તાજી થાય છે! પણ જોનારને એ મંદિર સંપૂર્ણ જ ભાસે છે!

ચાર માળ અને પોતાની આગવી ઉંચાઇથી ઓપતું આ તીર્થ ભંડારીજીની ભાવના-કથા કહેતું અને અનેક યાત્રીઓને પ્રેરણાનાં પીયૂષ પાતું આજેય ખડું છે! અને એનાં ચારે માળમાં વિરાજતી ચતુર્મુખી પ્રતિમાઓ જાણે સમવસરણની સ્મૃતિ કરાવી જાય છે!

દયા અને કરૂણાની મૂર્તિસમા શેઠાણી

પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

"વ્યક્તિ અને સમષ્ટિનાં શુભાશુભ કર્મોના કારણે જ પ્રત્યક્ષ દેખાતો સંસાર વિચિત્ર છે જેનો અનુભવ આપણે સૌ કરી રહ્યા છીએ."

"કોઈની બુદ્ધિ અને મન બાહ્ય દૃષ્ટિએ પરિમાર્જિત હોવા છતાં પણ તેના આન્તરજીવનનું માલિન્ય જ્યારે અનુભવાય છે ત્યારે આ સંસાર અત્યંત વિચિત્ર અને દુર્ગમ લાગે છે."

"વિચિત્ર સસારમાં રહેવા છતાં છે ભાગ્યશાળી પોતાના જીવનમાં સ્થૈર્ય-ગાંભીર્ય અને ધૈર્યની સ્થાપના કરશે તે જૈનધર્મની આરાધના કર્યાનું ફળ મેળવીને ઉર્ધ્વગતિ પ્રાપ્ત કરશે."

પોતાના એકના એક પુત્ર મોતીલાલને શહેરની એક શ્રીમંતની પુત્રી "કાન્તા" સાથે લગ્નગ્રન્થીથી જોડીને, ટૂંકી માંદગી ભોગવી સંસારની માયાને પૂર્ણ કરનાર દલસુખ શેઠ સ્વર્ગવાસી બન્યા. સંસારનો બધો વ્યવહાર મોતીલાલે પોતાના પર લીધો અને કાળજીપૂર્વક નભાવ્યો. સ્વર્ગવાસી માતા-પિતાનો સારો સંસ્કાર વારસો મળેલો હોવાથી મોતીલાલનું મન પૈસાની માયા કરતાં પણ જ્યાં સુધી બની શકે ત્યાં સુધી વ્રતોની અને ખાનદાનીની મર્યાદામાંશ્રી ચલિત ન થવું. જ્યારે કાન્તાબહેન બહુજ ખંતીલા, સરળ અને માંડેલી ગૃહસ્થાશ્રમીમાં દીવાળીના દીવડા પ્રકાશિત કરવા માટે સ્વાર્થોનું બલિદાન દેવાની ક્ષમતા રાખતા હતાં.

આ ભવના કર્મો ગમે તેટલા સારા હોવા છતાં પણ માનવતા જીવનમાં હજારો-લાખો ભવોના ઉપાર્જિત કરેલા પાપો પર સત્તામાં પડેલા હોય છે અને તેના ઉદયકાળમાં માનવને તડકા-છાયડા જોયા વિના બીજો માર્ગ રહેતો નથી. પિતાના અવસાન પછી મોતીલાલની ગ્રહદશા પણ અવળી પડી અને આજે તો ભૌતિક માયાએ પણ રીસામણા સાતે હાથતાલી આપીને વિદાય લીધી છે.

તેમ છતાં હતાશ થયા વિના અને અરિહંતોની શ્રદ્ધા છોડ્યા વિના મોતીલાલે વર્તમાનકાળને સત્કારી લીધો અને જાણે નવેસરથી જીવનનો પ્રારંભ કરવાનો સંકલ્પ કર્યો. સાથો-સાથ સાદાઈ અને ફોગટના ખર્ચાથી બચવાની પ્રતિજ્ઞા લઈ પોતાનું વતન છોડ્યું અને મુંબઈ જેવી નગરીમાં આવ્યો. પોતાના પિતાની ઓળખાણથી મોટા વ્યાપારીને ત્યાં નોકરી કેળવી લીધી અને વફાદારીપૂર્વક નોકરી કરતો તે મોતીલાલ પોતાના જીવનના દિવસો એક પછી એક પૂરા રહ્યો હતો

રંગરોગાન કરેલી સંસારની માયામાં એમ પુત્રીના માતા-પિતા બનેલ દંપતીએ પુત્રીનું નામ "મોહિની" રાખ્યું, જે ખરેખર દંપતીના દિલોને મોહિત કરી એક કરવા માટે મોહિની જ હતી. 'આમ' સુખપૂર્વક સાદાઈથી જીવન વ્યતીત થઈ રહ્યું હતું. પરંતુ જીવનની દિશાને જ્યારે કુદરત બદલવા તૈયાર થઈ હોય, તે સમયે તેની કુર દૃષ્ટિ પણ માણસને તપાવ્યા વિના રહેતી નથી અને બન્યું પણ તેવું જ કે બીજી વારના ગર્ભને ધારણ કરતી કાન્તાબેનની બિમારીએ ભયંકર રૂપ લેતાં પગારનો અને બચત કરેલી રકમનો મોટો ભાગ તેમાં હોમાઈ ગયો અને તેથી કરજદાર બનવાનો અવસર આવ્યો, સ્થિતિ દિવસે દિવસે બગડતી ગઈ. સાથોસાથ સમયપર દુકાન પર ન જવાને કારણે શેઠજી પણ નારાજ રહેવા

લાગ્યા.

ઝિંગરની અમી કેવી કાન્તા ધર્મપત્ની લગભગ મરણાસન્ન અવસ્થામાં પહોંચી અને બીજી બાજુ કાળજાના ટૂકડા જેવી મોહિનીને પણ તાવ લાગુ પડયો. જે ચાર દિવસથી હઠીલા અને ખાઉધરા જમાઈની જેમ ઉતરવા માટે તૈયાર ન્હોતો. અને બંને વચ્ચે મોતીલાલની સ્થિતિને પરમાત્મા સિવાય બીજો કોઈ જાણનાર ન્હોતો. લુખા રોટલાનો પણ વાંધો હોય ત્યાં ડોકટરના કહ્યા મુજબ દૂધ મોસંબી કે દવા પણ ક્યાંથી લાવવાના? ત્યા કારણે ન છૂટકે સ્વામીભાઈયો માટે કરાતાં ફંડ જેની પાસે હતાં તેમની દાઢીમાં હાથ નાખવા પડયા, પણ....

પણ....''જે સમાજ પાસે કૂતરા, બકરા, ઘેટા, ભૂંડ અને કબૂતરોને બચાવવા માટે હજારો રૂપિયા છે, વિતરાગનાં મંદિરોમાં રોશની માટે લાખો રૂપિયા છે, ત્યારે જાતભાઈ કે સ્વામીભાઈઓને કફોડી સ્થિતિમાંથી બચાવિને તેમને જીવત-દાન દેવા માટે ૧૦-૧૫ રૂપિયાથી વધારે પૈસો નથી. તે પણ એક વાર મેળવ્યા પછી બીજી વાર મેળવવાને માટે બે-ચાર મહિને સારા શુકન લઈને ગયા હોઈઓ તો વાત જુદી. અન્યથા અંગૂઠો જોવા સિવાય તથા બે સરસ્વતી સાંભલ્યા વિના છુટકો નથી.''

ગરીબ પોતાના અંતરાયકર્મોના કારણે ગરીબ થતો હશે પરંતુ શ્રીમંતોનો મૌલિક ધર્મ શું છે? શું આવા ધર્મને સંભળાવણાર કોઈ નથી? હશે તો સાંભળનારને કાન નથી? કાન હોય તો તેને પચાવીને વ્યવહારમાં ઉતારનાર કોણ હશે? અને આ બધી વાતોના જવાબ સામ્યવાદ આવ્યા પછી દેવાશે?

બે-ત્રણ વર્ષ પહેલા કેવળજ્ઞાન મેળવવાની આશાએ જ્ઞાનપંચમીનું ઉજમણું કરનાર પોતાના શેઠને વાત કરી, રોયો - આંસુ પાડયા, તેમના પગે પડયો. પણ હોયરે' ગરીબોના કમનસીબ....જે મુંબઈમાં લાખો-કરોડો રૂપિયા ધર્માદામાં ખર્ચાય છે ત્યા જાતભાઈઓને સાંભળનાર કોઈ નથી. તેમનો બેલી કોઈ નથી. ત્યારે દુ:ખથી ભરેલા તેમના માથા ઉપર હાથ મૂકીને આશ્વાસન દેનારને ક્યાંથી ગોતવો? આમાં ગુરૂદેવો પણ શું કરે? પર્યુષણના દિવસોમાં ગળાફાડીને સ્વામી ભાઈઓના ઉદ્ધાર માટે ફંડ કરાવે, જ્યાં ફંડ તીજોરીમાં આવ્યું કે...ગુરૂઓને સાંભળવા માટે પણ તેમની પાસે કાન ક્યાં હોય છે?

ઈસાઈઓની જનસંખ્યા માંસાહારી હોવાના કારણે વધી છે તે વાત ખોટી છે, પણ..તેમની પાસે માનવપ્રેમ, દયા-દાન ઉપરાંત ગરીબોને વસ્ત્ર-ઔષધ, રોટી અને બેટી દેવાની પૂર્ણ ક્ષમતા હોવાથી જ તેમનો ધર્મ અને જનસંખ્યા વધે પણ ઘટતી નથી. માની લઈએ કે માંસાહારથી જનસંખ્યા વધે છે તો હિન્દુસ્તાનમાં વૈષ્ણવ અને જૈનને છોડી બધાયે હિન્દુઓ માંસાહારી હોવા છતાં દેશમાં ભૂખમરો શાથી? સીમાતીત પારસ્પરિક સંઘર્ષ શાથી? અને દિવસે દિવસે હિન્દુસ્તાન કમજોર થઈ રહ્યો છે તે શાથી?

છેવટે ચોરી કરીને પણ પોતાના બંને જીવોને બચાવવાનો ઈરાદો કરી મોતીલાલ બીજે માળે રહેનારા શ્રીમંતના ઘરે ઘુસી ગયા. રંગમહેલમાં શણગારેલા પલંગ પર શેઠાણી સૂતી હતાં. તીજોરી, કબાટ અને તેમની ચાવીઓ ખુંટીએ લટકાતી હતી તથા ભીંત ઉપર મહાવીરસ્વામી અને આચાર્ય-દેવોની તસ્વીરો પણ હતી... થોડીવારને માટે સૌને શંકા થાય કે આટલી મોડી રાત્રે શેઠજી ક્યાં હશે? જોખમી સામાન પરમાત્માના ભરોસે શું સુરક્ષિત રહેતો હશે? આગળ કંઈ પણ વિચારાય તે પહેલા તો નીચેથી 'સાવધાન' ચોરનો ભય છે આવા અવાજો આવ્યા અને પલંગ છોડી શેઠાણી ઉભા થયાં.

આ દ્રશ્ય જોતાં જ મોલીલાલના પગ નીચેથી રેતી સરી રહી હતી. આખા શરીરે

ધ્રુજારી હતી, આંખે ચક્કર હતાં, માથું ભમી રહ્યું હતું. જે કારણે તે અહીં આવ્યો હતો પણ હાયરે! કમભાગ્ય! મારા જીગરની અમી જેવી, કાળજાના ટૂકડા જેવી પત્ની અને પુત્રી ક્યાં? અને હું જો પોલીસથી સપડાઈ ગયો તો? મોતીલાલ ના મનમાં હજારો વિચારો આવ્યા અને ગયાં તે આ પ્રમાણે:

"શું જૈનસમાજ પાસે જાતભાઈઓને બચાવવા માટે દયા છે જ નહિ?"

"દયા અને અહિંસાની વ્યાખ્યાઓ આટલી ટૂંકી શી રીતે થઈ હશે?"

"કબૂતરને દાણા, કબૂતરને રોટલા, ત્યારે સ્વામીભાઈઓને પગભર કરવા માટે કે તેમને મોતના પંજામાંથી ઉગારવા માટે યોજના ઘડનાર કોઈ નથી?"

મારી જેમ કેટલાય જૈન ભાઈયો કમોતે રીખાઈ રહ્યાં હશે! અને સર્વથા નિરાધાર બનેલી પોતાના શરીરનું લીલામ કરવું પડતું હશે!"

અવસર જોઈને શેઠાણીના પગ પર માથું મૂકીને મોતીલાલ પેટ ભરીને રડ્યો કેમ કે તેને પોતાની ચિંતા જેટલી ન હતા તેના કરતા, પોતાની પત્ની અને પુત્રીની હતી. કોણ જાણે શી રીતે બન્યું અને શેઠાણીનો પ્રેમાણ હાથ માથા પર પડ્યો અને શેઠાણીના પ્રેમાલ હાથ માથાપર પડ્યો અને હાથ પકડીને ઉભો કર્યો ત્યારે એટલું જ જોઈ શકાયું કે દયાની મૂર્તિ, જગદંબાસ્વરૂપ શેઠાણીની આંખ પણ ભીની હતી. થોડા સમય પછી સ્વસ્થ થઈને, સોફા પર બેસીને અહીં આવવાનું કારણ પૂછ્યું અને મોતીલાલે પોતાની બધી વિગત સાફ કહી દીધી. શૂન્ય મનસ્ક બનેલા શેઠાણી બોલ્યા કે....આ મારો જાતભાઈ-સ્વમીભાઈ છે. તેમની આવી કફોડી સ્થિતિને સાંભળવી માટે યુવક સંઘ, મહિલા કે ટ્રસ્ટીઓ પાસે કાન નથી:

મારા પિતાએ મને આવા શ્રીમંતના ઘરે પરણાવી છે. જ્યાં હીરા-મોતીના દાગીના છે પણ પતિનો પ્રેમ અમારા માટે રીસામણા લઈને બેઠો છે. મેઈકઅપ કરી શરીરને શણગારવા માટે લાખો રૂપિયા મારી પાસે છે પણ તેને જોવા માટે પતિ પાસે ટાઈમ નથી. અત્યારે રાતના એક વાગ્યાનો સમય છે. ભગવાન જાણે! અત્યારે મારો પતિ મુંબઈની કઈ ગલીઓમાં રખડતો હશે! આવા વિચારથી પવિત્ર હૃદયવાળા શેઠાણીએ કહ્યું કે વીર! આજથી તું મારો ભાઈ છે, હું તારી બહેન છું. ગયા ભવના પાપે શ્રીમંતનું ઘર મને સાંપડ્યું છે પણ હવે આવતા ભવને સુધારવા માટે આજથી મહિલામંડળમાં અધ્યક્ષપદને લાત મારીને મારી બધી શક્તિઓને જાતભાઈઓ માટે કામે લગાડીશ! એમ કહીને સોનાની બે બંગડી મોતીલાલને આપી અને પાછળના રસ્તેથી શેઠાણીએ તેનને સડકપર ઉતારી દીધો.

ઘરે ગયેલો મોતીલાલ પોતાની પત્ની પાસે આવીને ઉભો પણ તેના છેલ્લા નસકોરા સાંભળીને ઘબડાઈ ગયેલો તે પોતાની પુત્રી પાસે ગયો, પણ ...તેનું મૃત શરીર હાથ લાગ્યું. પોક મૂકીને જમીન પર પડતા મોતીલાલે ચીસ નાખી પણ....સંભવ છે કે કાન્તાએ પણ છેલ્લા શ્વાસ મૂકી દીધા...તેના દુ:ખની સીમા ન રહી.

બેનના આખરી કર્મ પતાવીને મોતીલાલ બંગડીઓ લઈને શેઠાણી પાસે આવ્યો. બનેલી હકીકત કહીને રડી પડ્યો શેઠાણી પણ રડ્યા....અને પૂછ્યું હવે શું કરશો?

મોતીલાલે કહ્યું સંયમધર્મની આરાધના કરીશ.

આ વધી વાતો મોતીલાલમાંથી મુનિરાજ બનેલાએ તારંગાના પહાડ ઉપર મને કરી અને મારૂ માથું તેમનાં ચરણે ઢળી પડ્યું.

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

जहा सूई ससुत्ता, पडिआविन विणस्सइ ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारेविन विणस्सइ ।।

– उत्तराध्ययन २९/५९

जिस प्रकार धागे में पिरोई हुई सुई गिर जाने पर भी गुम नहीं होती है, उसी प्रकार ज्ञान रूप धागे से युक्त आत्मा संसार में कहीं भटकती नहीं, अर्थात् विनाश को प्राप्त नहीं होती ।

सव्वभावाहिगमं जणयइ ।।

– उत्तराध्ययन २९/५९

ज्ञान की सम्पन्नता से जीव सभी पदार्थ-स्वरूप को जान सकता है ।

नाण संपन्नेणं जीवे चाउरन्ते ।
संसारकन्तारे न विणस्सइ ।।

– उत्तराध्ययन २९/५९

ज्ञाना से संपन्न जीव चार गति-रूप संसार अटवी में विनाश को प्राप्त नहीं होता ।

एगे नाणे ।

– स्थानांग १/४३

उपयोग की दृष्टि से ज्ञान एक प्रकार का है ।

सुयस्स आराहणयाएणं अन्नाणं खवेइ ।

– उत्तराध्ययन २९/२४

ज्ञान की आराधना करने से जीव अज्ञान का क्षय करता है ।

नाणेन विणा न हुंति चरण गुणा ।

– उत्तराध्ययन २९/३०

ज्ञान के अभाव में चारित्र - संयम गुण प्रकट नहीं होता ।

नाणी नो पमायए कयावि ।

– आचारांग ३/३

ज्ञानी आत्मा को किसी भी परिस्थिति में प्रमाद नहीं करना चाहिए ।

सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरन्ति ।

– आचारांग १/३/१

अज्ञानी सदा सोये रहते हैं और ज्ञानी सदा जागते रहते हैं ।

नह्यज्ञानात् परः पशुरस्ति ।

– नीतिवाक्यामृत ५/३७

अज्ञान से बढ़कर कोई पशु नहीं है ।

अण्णाणमओ जीवे कम्माणं कारगो होदि ।

– समयसार ९२

अज्ञानी आत्मा ही कर्मों का कर्ता होता है ।

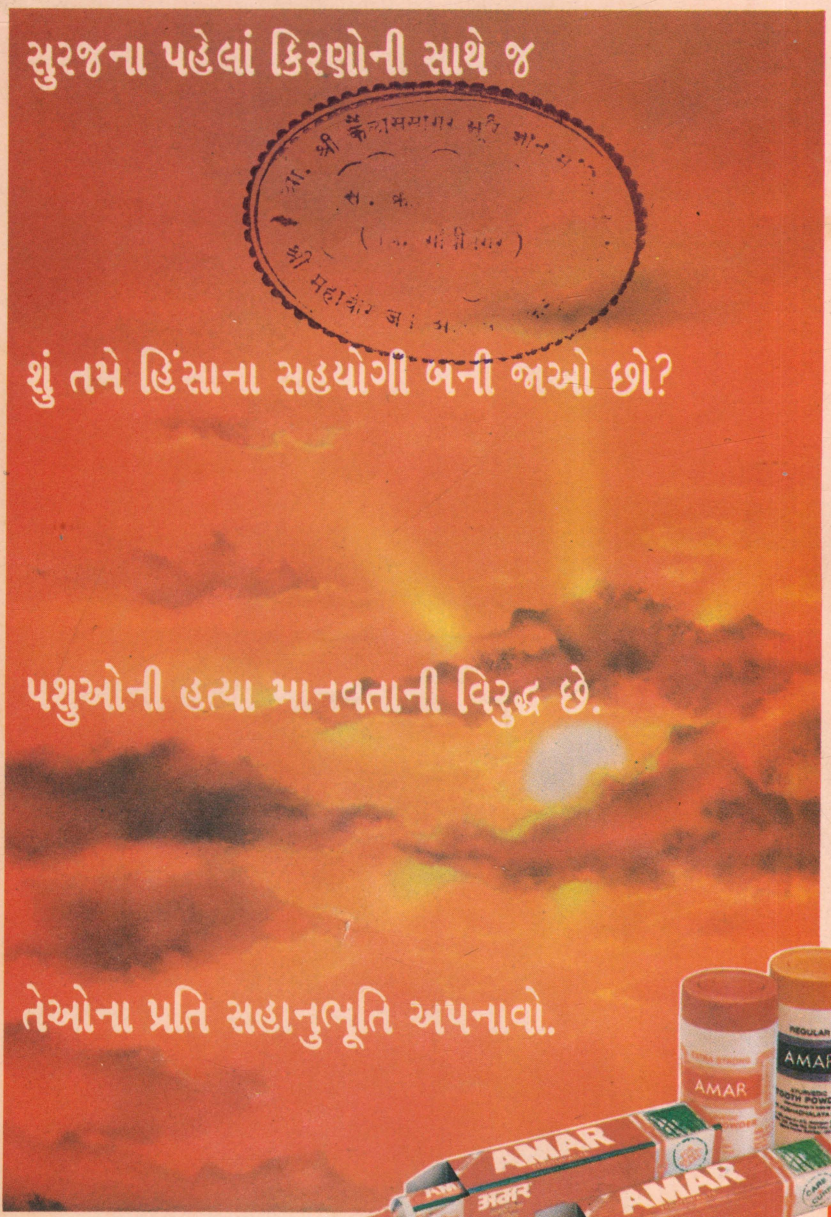

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

सम्पादक : जे. के. संघवी, अ. भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स-थाने में मुद्रित ।